NAGRI-PRACHARINI GRANTHMALA SERIES NO. 8.

कवि श्रीधर कृत

# जंगनामा ।

श्रीराधाकृष्णदास और
श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी
सम्पादित

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित

---

1904
TARA PRINTING WORKS,-BENARES.

# इतिहास।

—:o:—
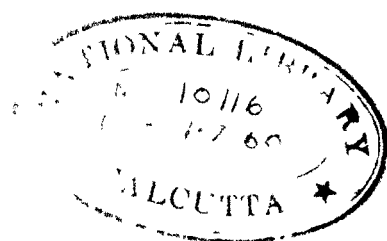
औरङ्गज़ेब के बेटे बहादुरशाह के २६ फ़रवरी सन् १७१२ ई० (हिज़्री ११२४ मुहर्रम २०) को मरने पर उनके लड़कों में झगड़ा खड़ा हुआ, वरञ्च यह झगड़ा पहिले ही से आरम्भ होगया था. बहादुरशाह के चार बेटे थे. मुईज़ुद्दीन (जहाँदारशाह) अज़ीमुश्शान, रफ़ीउश्शान और जहाँशाह. जहाँदारशाह से उस के रहन सहन के ढंग और पिता से प्रायः दूर अपनी राजधानी मुलतान में, जहाँ का वह सूबेदार था रहने के कारण पिता का जी फिर गया था तथा प्रायः सब लोग उससे अप्रसन्न थे. पिता का पहिले स्नेह तीसरे बेटे रफ़ीउश्शान पर था पर थोड़े दिन पीछे उसका चित्त इनसे भी फिर गया और दूसरे बेटे अज़ीमुश्शान पर कृपा होगई चौथा बेटा जहाँशाह प्रायः बीमार रहता था. अज़ीमुश्शान. बङ्गाल और बिहार की सूबेदारी पर औरङ्ग़ज़ेब के समय से ही था. इसने बङ्गाल की सूबेदारी और पिता की कृपा से बहुत सा धन एकत्र कर लिया था इससे उसके सब भाई कुढ़ते थे।

बहादुरशाह के मरते समय लाहौर में उनके पास अज़ीमुश्शान था. तीनों भाइयों ने मिलकर उसपर चढ़ाई कर दिया. चार दिन तक घोर युद्ध हुआ. अज़ीमुश्शान की सेना भागी. अन्तिम दिन एक गोला आकर अज़ीमुश्शान की हाथी पर गिरा जिससे हाथी घबड़ाकर भागा और रावी नदी में अज़ी-मुश्शान को लिए हुए डूब गया।

जुलफ़िकारखाँ, बहादुरशाह के वज़ीर ने रफ़ीउश्शान और जहाँशाह को बराबर राज्य बाँट देने की प्रतिज्ञा किया था परन्तु अज़ीमुश्शान के मरने पर उसने राज्य बाँटना और लूट का धन देना अस्वीकार किया. जहाँशाह और रफ़ीउ-श्शान ने सेना संग्रह करके युद्ध आरम्भ किया परन्तु पहिले युद्ध में जहाँशाह मारा गया दूसरे दिन की लड़ाई में रफ़ीउश्शान भी वीरता से लड़कर मारा गया. बहादुरशाह ने विजय प्राप्त किया और लाहौर में, उसी लड़ाई के मैदान में ता० २१ सफ़र सन् ११२४ हिज्री (२९ मार्च १७१२ ई० ) को दरबार करके भारतवर्ष का साम्राज्य पद ग्रहण किया. उसका नाम हुआ अबुलफ़तह मुहम्मद मुईजुद्दीन जहाँदारशाह ।

अज़ीमुश्शान का बड़ा बेटा मुहम्मदकरीम छिपा हुआ था वह पकड़ा गया और बड़ी निर्दयता के साथ मारा गया

ता० १ मे १७१२ ई० को जहाँदारशाह दिल्ली के लिये चला और ता० २२ जून १७१२ ई० को दिल्ली पहुँचा. यह सुनकर कि अज़ीमुश्शान का दूसरा लड़का फ़र्रुख़सियर बङ्गाल से पटना में आगया है और दिल्ली पर चढ़ाई करने वाला है जहाँदारशाह ने अपने बड़े बेटे ऐज़ुद्दीन को ५०००० सेना और ९ करोड़ रुपया के साथ आगरा में नियत किया जिसमें वह फ़र्रुख़सियर का रास्ता रोके.

जहाँदारशाह ने लालकुँअर नाम की वेश्या को महल में डाल लिया था उसका नाम इम्तियाज़महल रक्खा गया और उस के परामर्श पर वह सब काम करता था. नाच तमाशे रोशनी आदि में इतना अपव्यय होता था कि अन्न, घी, तेल आदि बहुतही महँगे होगए थे. उसकी निर्दयता इसी से समझ लेना

चाहिए कि एक दिन जहाँदारशाह लालकुँअर के साथ यमुना किनारे की छत पर टहल रहा था, इतने में उसने एक नाव पर बहुत से मनुष्यों को यमुना पार करते देखा, लालकुँअर ने कहा कि "मैं ने कभी मुसाफ़िरों से लदी नाव डूबते और उसके सवारों की दशा नहीं देखा है" तुरन्त बादशाह का इशारा हुआ और एक नाव डुबाई गई. निदान उसके नातेदारों के अन्याय आचरण से लोगों के नाकों में दम आगया. सरदारों में आपस में वैर भाव बढ़ने लगा. रंडी भडुओं के अधिकार से भले आदमियों का दरबार में निरादर होने लगा. जहाँदारशाह दिन रात नाच रङ्ग में मस्त रहता था.

बहादुरशाह के मरने और पिता अजीमुश्शान के मारे जाने का समाचार पटना में फ़र्रुख़सियर के पास पहुँचा पहिले तो वह बड़ा दुखी हुआ और आत्मघात का विचार किया परन्तु माता की दृढ़ता और उत्तेजना से उसको साहस हुआ. उसने वहीं साम्राज्य पद ग्रहण किया और अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और सेना संग्रह करके दिल्ली की ओर कूच किया. बारहा के सैयद हसनअलीखाँ प्रसिद्ध नाम अब्दुल्लाहखाँ और उनके भाई सैयद हुसेनअलीखाँ इसके पक्ष पर हुए. इन में से पहिले को इलाहाबाद और दूसरे को बिहार की सूबेदारी केवल अजीमुश्शान की कृपा से मिली थी. इस ग्रंथ में इसी लड़ाई का सविस्तर वर्णन है, जिस का सारांश आगे दिया जायगा ।

फ़र्रुख़सियर का जन्म दक्षिण में, औरङ्गाबाद में हुआ था मिस्टर इर्विन साहब ने जर्नल एशियाटिक सोसाइटी नं० २ सन् १८९६ में इसके जन्म की तारीख १९ रमजान सन् १०९४

हिज्री ( ११ सितम्बर १६८३ ई० ) बहुत ढूंढ के साथ निश्चय किया है, परन्तु पूज्य भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने "बादशाह दर्पण" में बृहस्पतिवार १३ रज्जब सन् १०९५ हिजरी लिखा है, यह ग्रंथ बहुत ही प्रामाणिक है क्योंकि यह दिल्ली शाही घराने के दफ्तर के आधार पर बना है. भारतेन्दु जी के मातामह शाही घराने के काशी में आने पर दीवान थे. फ़र्रुख़सियर बचपन ही में दिल्ली भेज दिया गया था परन्तु फिर सन् ११०५ हिजरी ( सन् १६९३-१६९४ ई० ) में प्रपितामह औरङ्गज़ेब ने दक्षिण में बुलाकर अपने पास तीन वर्ष तक रक्खा था. वहाँ से अपने पिता अज़ीमुश्शान के साथ आगरा और वहाँ से बङ्गाल आया. पिता बहादुरशाह की कृपा होने से अज़ीमुश्शान, फ़र्रुख़सियर को बङ्गाल में छोड़ कर लाहौर चला आया था, कुछ दिन पीछे फ़र्रुख़सियर को भी लाहौर में बुलाया था, वह पटना तक भी नहीं पहुँचा था कि लाहौर की खबर उसे लगी इस समय फ़र्रुख़सियर के पास न तो धन ही था न बल, केवल ४०० सेना साथ थी बड़े बड़े सब सरदारों ने जिनपर उसके पिता के बड़े बड़े उपकार थे मुँह मोड़ लिया था. केवल माता के साहस दिलाने पर आगे बढ़ने का विचार किया था।

सैयद अब्दुल्लाह और हुसैनअली के मिलजाने पर और भी सरदार तथा ज़मींदार मिले. रुपया भी इकट्ठा हुआ और फ़र्रुख़सियर इलाहाबाद आया जो सैयद अब्दुल्लाह के अधिकार में था. वहाँ उसे राजा छबीलेराम भी मिले जिनके पास बहुत सा मालगुज़ारी का रुपया इकट्ठा था।

जहाँदारशाह ने अपने बड़े बेटे ऐज़ुद्दीन को आगरा से

फ़र्रुख़सियर को रोकने के लिये इलाहाबाद भेजा पर वह हार कर आगरा भाग आया जिसका वर्णन इस ग्रंथ में है.

आगरा में घोर युद्ध हुआ, उसमें हारकर जहाँदारशाह लालकुँअर के साथ दिल्ली भाग आया. उसने भेष बदलने के लिये दाढ़ी मुड़वा डाली थी. यह लोग एक बैलगाड़ी पर दिल्ली आए. लालकुँअर अपने घर चलदी, जहाँदारशाह अकेला असदख़ाँ (ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ के पिता) के यहाँ गया, ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ एक दिन पहिले दिल्ली पहुँच गया था, पिता पुत्र ने निश्चय किया कि अब फ़र्रुख़सियर से लड़ना व्यर्थ है, उस से मिल जाना ही अच्छा होगा. उसने अभागे जहाँदारशाह को क़ैद कर लिया और फ़र्रुख़सियर के दिल्ली पहुँचने पर उसे पेश कर बहुत कुछ उन्नति की आशा की. फ़र्रुख़सियर ने दिल्ली पहुँचकर जहाँदारशाह को मरवा डाला. ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ के पिता और ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ को उनके निमकहरामी पर दंडित किया और निष्कंटक दिल्ली के राज्य सिंहासन पर विराजा।

—:o:—

## ग्रन्थ का सारांश ।

———:o:———

### जहाँदारशाह और फ़र्रुख़सियर का युद्ध ।

( जिस समय बहादुरशाह का परलोक हुआ, फ़र्रुख़सियर उस समय बङ्गाल में था ) महाजनों की आपस की चिट्ठी से यह समाचार विदित हुआ । फ़र्रुख़सियर ने आज़मख़ाँ बख़शी को आज्ञा दिया कि जितनी फ़ौज मिलै उसे भरती करके दिल्ली की ओर चलना चाहिए । इसके पीछे कुछ दिन पर पक्का समाचार आया कि ज़ुलफ़िक़ारख़ाँ और सब अमीर लोग मुईज़ुद्दीन से मिल गए उसने सब फ़ौज को भी फोड़ कर मिला लिया और मुईज़ुद्दीन को राज्य पर बैठा कर उसके नाम का ख़ुतबा पढ़ा गया तथा सारे राज्य में उसके नाम से फ़र्मान जारी किया गया है । यह सुनकर फ़र्रुख़सियर ने अपने सब सर्दारों को एक एक कर के आज्ञा दी कि जिसे जितनी फ़ौज मिलै रखते जाओ । वह वहीं तख़्त पर बैठा । उसके अमीर लोग फ़ौज रखने लगे । सब से पहिले अब्दुल्लाहख़ाँ ने कूच किया । वह इलाहाबाद का सूबेदार नियत हुआ और उसने वहाँ अपना अधिकार जमाकर वहाँ मोर्चा दृढ़ किया ।

मीरजुमला दिल्ली में बैठा, फ़र्रुख़सियर को सब समाचार लिखता रहा । उसने लिखा कि सैयद राजख़ाँ इलाहाबाद के सूबेदार नियत हुए हैं । उसने हिरौल में सैयद अब्दुल ग़फ़ा-

र को आगे से भेजकर पीछे से धूमधाम के साथ ऐजुद्दीन के साथ भारी सेना लेकर कूच किया है । यह पत्र पढ़कर फर्रुखसियर ने क्रोध के साथ सब अमीरों की ओर देखा। हुसैनअलीखां ने कहा कि उसके लिये अकेले अब्दुल्लाहखां बहुत हैं, कुछ चिन्ता न कीजिए उन्हें तुरंत समाचार दे देना चाहिए, वह उसके दल को मार भगावेंगे । फर्रुखसियर ने सैयद अब्दुल्लाहखाँ के पास फ़र्मान भेजा. सैयद अब्दुल्लाहखाँ ने आज्ञानुसार सराय आलमचंद में डेरा डाल कर शत्रु का रास्ता रोका । अपने भाई के साथ सब सरदारों को देकर लड़ाई के लिये भेजा । ये सब अमीर दलबल सहित लड़ने के लिये प्रस्तुत हुए, सैफ़ुद्दीँअलीखाँ, निज़ामुद्दीँअलीखाँ, सिराजुद्दीँअलीखाँ, राजा रतनचन्द, मीरमुहम्मदखाँ, अनवरखाँ, समुन्दरखाँ, इदगारबेग, बर्क़न्दाज़खाँ के बेटे मिर्ज़ा बहरामबेग, और सैयद दरवेशअलीखाँ, आदि कितनेही सरदार प्रस्तुत हुए ।

इधर ये लोग और उधर वे लोग आकर ठहरे । सवेरा होने पर दोनों दल का सामना हुआ और घोर लड़ाई आरम्भ हुई । सैयद सिराजुद्दीँअलीखाँ इस लड़ाई में मारे गए इस पर क्रोध के साथ महाघोर युद्ध मचा और अन्त में मीर सैफ़ुद्दीँ-अलीखाँ, निज़ामुद्दीँअलीखाँ आदि विजय प्राप्त करके कुतबुल-मुल्क सैयद अब्दुल्लाहखाँ के पास आए । सैयद सब से गले मिले, बहुत कुछ पारितोषिक बाँटा । कुतबुलमुल्क ने साहबराय माथुर को आज्ञा दी कि सब समाचार यहाँ का बादशाह को लिख दें । और भाई हुसैनअलीखाँ को समझा करके लिखो कि अब आप लोग बिलम्ब न कीजिए सेना

सहित शीघ्र आइए । यह भी लिखा कि ऐज़ुद्दीन ने कोड़ा में डेरा किया है राजा छबीलेराम छल करके उनसे जाकर मिल गए हैं और असग़रअलीखाँ भी योंही इटावे में आगे से बढ़ कर मिल गए हैं पर दोनों का मन अपनी ओर है। इधर ज़ैनुद्दींखाँ, जीवाजख़ाँ, मुज़फ्फ़रअलीखाँ फ़कीरूल्लाहखाँ और महियारखाँ, आकर मिल गए हैं और ये सब सरदार हुज़ूर से मिलने पटने गए हैं । और समाचार पत्र वाहक इब्राहीमहुसैनखाँ के ज़ुबानी कहलाया। अमीरूलउमरा सैयद हुसैनअलीखाँ ने पत्र पढ़ा और सब समाचार बादशाह से निवेदन करके आगे बढ़ने की आज्ञा चाही । फ़र्रुखसियर ने कहा कि दो दिन और ठहर जाइए पहिले सब बीर अमीरों को बिदा कीजिए । ऐज़ुद्दीन की चिन्ता न करनी चाहिए, अब तो मुईज़ुद्दीन पर चढ़ाई करनी है।

दूसरे दिन बादशाह ने दर्बार, दीवान खास में, किया और सैयद मुर्तज़ाखाँ को आगे से पछाँह की ओर बढ़ने की आज्ञा दी। मुर्तज़ाखाँ ने तुरन्त सेना सहित कूच किया और बहादुरपुर में डेरा डाला, फिर आज़मख़ाँबख़्शी को सेना सहित बढ़ने की आज्ञा दी. आज़मखाँ के चारो भाई महम्मद सालिहखाँ, महम्मद शुजा, महम्मद हुसैन, और ग़ुलामुहीयुद्दीं सजकर साथ हुए। और भी ये सब सरदार आज़मखाँ के साथ हुए, मीर अज़ीज़खाँ, हेमखाँ (?), सुल्ताँकुलीखाँ, मुहम्मदहयात, नेकनामखाँ, खैरुद्दींअलीखाँ, दिलावरखाँ और मुहम्मद अमाबेग।

फिर बादशाह ने इन सरदारों को आगे बढ़ने की आज्ञा दी फ़र्जन्दखाँ, सलावतखाँ, सैफ़खाँ, माज़िन्दराँपति सादात

बेटे, मीरजुमला, मीर मुकर्रम, शुजातुल्लाहखाँ, शेख रहमतुल्लाहखाँ और तैमूरखाँ। चारों ओर से घेरने के लिये बादशाह ने चार सेना भेजी।

दूसरे दिन जब बादशाह दर्बार में बैठा तो अशरफखाँ हाज़िर हुआ। यह सरदार मौजुद्दीं का साथ छोड़कर ऐजुद्दीन की दृष्टि बचाकर आ मिला था। इनके मिलजाने से फर्रुखसियर को बड़ा हर्ष हुआ। उनको खानदौरा का खिताब दिया गया। उसने निवेदन किया कि अब पछाँह की ओर चलिए। शुभ मुहूर्त में बादशाह ने यात्रा की। इब्राहीमहुसैन आकर मिला। उन्हें भागलपुर जाने की आज्ञा दी गई। जैनुद्दीनखाँ मिला, उसे खाँबहादुर खिताब दिया। जाँबाज़खाँ मिला, उसको सरोपाव दिया गया। फकीरुल्लाहखाँ मिला, गैरतखाँ मिला। उसको पटने का सूबेदार किया। ये सब सर्दार साथ में चलने के लिये सेना सहित प्रस्तुत हुए, अलीनकीखाँ हुसैनअलीखाँ, इनायतुल्लाहखाँ का बेटा शुजातुल्लाहखाँ, मीरमुशर्रफ़, मीरमुहम्मद हयात, असदअलीखाँ आतिशखाँ, खानदौराँ, शमसामुद्दौला, मुज़फ्फरखाँ, नूरुल्लाह खाँ पुत्र सहित इनायतखाँ, दोस्तअलीखाँ, वलीमुहम्मद, सादातखाँ, खानज़ादखाँ, शाइस्ताखाँ, गाज़ीयुद्दीनखाँ, रुस्तमखाँ दाऊदखाँ दुपट्टाबाज,तकर्रुबखाँ, अशरफ़खाँ, अमीरखाँ, मीरखाँ, सैफुल्लाह खां, मिर्ज़ा कासिमबेग, सुलतांबेग, फ़तहुल्लाखाँ, अफ़रासियाब खाँ, मुहम्मद वासेहखाँ, फ़तहअलीखाँ, राजागन्धर्वसिंह, सफ़शिकनखाँ, गुलामअलीखाँ, (इनको ज़ुलफिकारखाँ खिताब मिला था) मुमताज़खाँ, इमतियाज़खाँ, दर्बारखाँ, मुज़फ्फ़रअलीखाँ, अकबरअलीखाँ, सैयदअनवरखाँ, जब्बरअलीखाँ, बैरमखाँ, रशीद

खाँ, इलायचीबेग, (इनका खिताब बहादुर दिलखाँ था,) अख्तियारखाँ, मुखसिलखाँ ख्वाजा अब्दुल्लाह, और ख्वाजा रहमतुल्लाह ।

सब सरदारों के प्रस्तुत होने पर फ़र्रुखसियर ने अरफ़खाँ को पेशखेमा लेकर आगे बढ़ने की आज्ञा दी । दूसरे दिन सबेरे धूमधाम के साथ बादशाह ने स्वयं कूच किया । शीघ्रता के साथ कूच करते हुए खजुरी पहुँचे, वहाँ सेना साथ लेकर आज़मखाँ आकर मिले, बहादुरपुर में मुर्तज़ाखाँ मिले, बनारस में ईद करके आगे बढ़े । फिर झूसी में डेरा पड़ा । वहाँ सैयद अब्दुल्लाहखाँ आकर हाज़िर हुए । उन्हें "कुतबुल् मुल्क" का खिताब दिया गया । और सरदारों को भी यथायोग्य मनसब और सरोपाव मिला । प्रयाग में पश्चिम की ओर से गंगाजी पर पुल बाँध कर पार उतरे । चार दिन वहाँ मुक़ाम हुआ । वहाँ फ़र्ज़ंदखाँ, सलावतखाँ, और सैफ़खाँ मिले । कड़े ( मानिकपुर ) के पास आकर छबीलेराम मिले । उन्हें चौहज़ारी मनसब मिला । हथगाँव में आकर अलीअसगरखाँ मिले । इन्हें चौहज़ारी मनसब मिला और इनका नाम खानज़माखाँ रक्खा गया । पूर्व ओर कुवरपुर और पश्चिम ओर बिंदुकी गाँव के बीच में बादशाह ने डेरा डाला । वहाँ से तीन कोस पर पश्चिम की ओर फ़तिहाबाद और पूर्व की ओर बिंदुकी गाँव के बीच में ऐजुद्दीन ने डेरा डाल रक्खा था । दोनों दल की लड़ाई आरम्भ हुई । बादशाह ने इस लड़ाई में शाहज़ादे को सेनापति बनाया । अब्दुल्लाहखाँ और हुसैनअलीखाँ ने आगे बढ़ कर सेना खड़ी की । ये सब सरदार सजकर खड़े हुए—इनायतुल्लाहखाँ, शुजाअतअलीखाँ मीर मुश-

रैफ़, सैयद हयात महम्मद, मीर बुज़र्ग, मीर अशरफ़, सैयद फ़तेह अलीख़ाँ, सैफुल्लाहख़ाँ, असद अलीख़ाँ, जिसने आतिशख़ाँ पद्वी पाया, रहमतख़ाँ ( पदवी मुतहौवरख़ाँ ) राजा रत्नचन्द, सैयद अनवरख़ाँ, मीर मुहसनख़ाँ, बरक़न्दाज़ख़ाँ और उसका लड़का, समुन्दरख़ाँ का लड़का, यादगार बेग का बेटा सैयद दरवेश मुहम्मद, मियाँ मंजूर, हसनख़ाँ प्रयाग के दीवान, मुज़फ्फर अलीख़ाँ तोड़ाबाज़, बारहापति ( सैयद अब्दुल्लाह ) जैनुद्दीनख़ाँ, जाँबाज़ख़ाँ, राजा छबीलेराम, अमीनुद्दीनख़ाँ, आज़मख़ाँ, गुलाम मुहैयुद्दीनख़ाँ, तक़र्रुबख़ाँ, अली असग़रख़ाँ, ख़्वाजा अब्दुल्लाह, ( उनका बेटा ) ख़्वाजा रहमतुल्लाह, खानदौराँ, मुज़फ्फ़रख़ाँ, नूरुल्लाहख़ाँ, शेख़ इनायतअली, दोस्त अलीख़ाँ, वली महम्मद, अकबर अलीख़ाँ, खैरुद्दीँ अलीख़ाँ, दिलावरख़ाँ, शमशामुद्दौला, सादातख़ां, फ़र्ज़न्द अलीख़ाँ ( मल्लावतख़ाँ का बेटा ) सैफख़ाँ, सादातख़ाँ के बेटे, अमीरख़ाँ के बेटे मीरख़ाँ, मीर जुमला, मीर मुकर्रम, शुजातुल्लाहख़ाँ, मीर अकरम, हलीमख़ाँ, मुमताज़ख़ाँ, सादातख़ाँ, इमत्याज़ख़ाँ, ख़ानाज़ादख़ाँ ( पदवी शाइस्ताख़ाँ ) ग़ाज़ियुद्दीँअलीख़ाँ, रुस्तम ख़ाँ, दाऊदख़ाँ ( दुपट्टावाज़ ) सुलताँबेग, क़ासिमबेग, फ़तहुल्लाहख़ाँ फतेह अलीख़ाँ, अफ़रासियाबख़ाँ, बासेख़ाँ, दरबार ख़ाँ, अरसलाख़ाँ, सैयद मुर्तजाख़ाँ, राजा गन्धर्वसिंह, अनवर ख़ाँ, ज़ब्बरख़ाँ, मिर्ज़ा फकीरुल्लाहख़ाँ, इफ़तख़ारख़ाँ, मुख़लिस ख़ाँ, सफ़शिकनख़ाँ गुलामअलीख़ाँ, बैरमख़ाँ, रशीदाख़ाँ, और इलायची बेग ( पदवी बहादुर दिलख़ाँ ) फ़र्रुख़सियर ने और चारो ओर सेना बाँट दी, स्वयं घाटी रोक कर खड़ा हुआ, घोर युद्ध हुआ। ऐजुद्दीन की सेना भागी। खूब लूट हुई। सब लोगों ने बधाई दी।

इमतियाज़खाँ ने निवेदन किया कि अबुलसमुद अली-खाँ, राजेखाँ, मादिक़खाँ लुतफुल्लाहखाँ, और दिलेरखाँ आदि मौज़द्दीन के विश्वासपात्र सरदार थे, पर कोई न ठहर सके। एज़द्दीन को लेकर भाग गए। बादशाह ने मुमताज़ खाँ को बुलाकर आज्ञा दी कि बहुमूल्य शराब, हाथी, घोड़े, तोप और नगाड़ा रखकर और जो वस्तु जिसने लूट में पाई हो वह उसको देदो।

दूसरे दिन दर्बार हुआ, मुज़फ़्फ़रखाँ को खानेजहाँ बहादुर का और रहमन खाँ वलीअहद को मुतहौवर खाँ का खिताब दिया गया और सब सरदारों को बहुत कुछ इनाम मिला। चार दिन बादशाह ने वहाँ रहकर विश्राम किया। फिर शाहमदार के नगर में पहुँच कर ज़यारत की। वहाँ दस दिन डेरा रहा।

मीर जुमला ने दिल्ली से अर्ज़ी भेजी। मुमताज़खाँ ने बादशाह को वह पत्र दिया। तक़र्रुबखाँ ने उसे पढ़ कर सुनाया। सैयद अब्दुल्लाहखाँ का बुद्धिमान वज़ीर शिरोमणिदास काय-स्थ मौज़ुद्दीन की सभा में मिल गया था, उसने वहाँ के सब समाचार लिखकर, कुनबुलमुल्क को लिखा कि मौज़ुद्दीन अ-भिमान में भर गया और रात दिन नशे में चूर रहता है। सारी सभा कलावन्तों से भर गई है। सब के सब किसी योग्य न होने पर भी माही मरातिब, अलमपंजा, तोग, और नौबत पा-कर अभिमान से फूल गए हैं, दिन रात ढोल मृदंग शराब अफ़ीम, रंडी, छोकरे, नट, कलावत की ही चर्चा रहती है लड़ाई आदि का कभी ध्यान ही नहीं है, कोकिलताशखाँ और जुलफ़िक़ारखाँ ने अपने स्वाधीन सारा अधिकार कर रक्खा

है, इन दोनों में भी आपस में वैर होगया है ग़ाज़ीयुद्दीनखाँ वलीखाँ, महम्मदअली खा, अब्दुस्समुदखाँ, क़मरुद्दीन खाँ ज़ि-क्रियाखाँ, रहमरहमाँ खाँ, और तूरानिया सभों को मीर जुमला ने मिला लिया है, ये सब लड़ाई में न लड़ेंगे।

एक दिन शराब में मस्त होकर मौजुद्दीन ने नवरोज़ की आज्ञा दी कि इतने ही में कन्नौज से ऐजुद्दीन के भागने का समाचार पहुँचा। सब के हाथ पैर फूल गए। मौजुद्दीन क्रोध से जल उठा। ख्वाजा हुसेन अपनी बड़ हाँकने लगा। आगरे में जो सब भगोड़े आए थे उन्हें आज्ञा भेजी कि सब वहीं घाट रोके बैठे रहैं। बालँभपुर के नीचे तीन पुल बँधवा रक्खे जायँ, हम अभी पहुँचते हैं।

बख़शी को बुलाकर आज्ञा दी गई कि सब तयारी तुरंत करो, सेना की तनख़ाह दो महीने की पेशगी दीजाय, मीर-मंज़िल को विदा कर दो, सब स्थानों की खबरें लो। सब अ-मीरों को बुलाकर आज्ञा दी कि सब प्रस्तुत हो ऐसा उपाय हो कि सवेरे ही कूच हो। झटपट आगरे पहुँचकर इटावे में बढ़कर शत्रु को रोकें। यह आज्ञा होते ही सारे नगर में कोलाहल मच गया, सब अमीर तयारी करने लगे। बड़े सवेरेही सवारी तयार हुई, मौजुद्दीनज्योंही सवार हुआ कि चारो ओर अशकुन होने लगे। शीघ्रता के साथ आगरे में आकर पहुँचे, समागर में डेरा पड़ा, वहां ऐजुद्दीन की भागी सेना आकर मिली। मौजुद्दीन इन सभों के सामने अपनी बड़ाई हाँकने लगा, छबीलेराम और अलीअसग़र को धोखा देकर शत्रु से मिलने पर क्रोध प्रकाश करने लगा। फिर सब मोहासरा किया गया। पाँच लाख सवार, दो लाख तोप और कई हज़ार हाथी ठहरे। तोप दाग़ी गईं।

पत्र कुतुबुल्मुल्क को क़ासिद ने दिया, साहबराम माथुर ने उसे सुनाया अब्दुल्लाहख़ाँ ने पत्र लेकर फ़र्रुख़सियर को दिखाया। उत्साह के साथ कूच की तयारी होने लगी। मुहम्मदख़ाँ बंगश बीस हज़ार सेना लेकर मिला। अरसलाख़ाँ पेशख़मा लेकर आगे बढ़ा। सवेरे फ़र्रुख़सियर सवार हुआ। शीघ्रता के साथ रास्ता तै करके आगरे पहुँचा। इस पार इनकी सेना थी, उस पार उनकी। एक भेदिये ने समाचार दिया कि पश्चिम ओर थोड़ी दूर पर यमुना में जल पायाब है। फ़र्रुख़सियर ने शत्रु को धोखे में रखने के लिये थोड़ी सी सेना छोड़ दी और वह आप सब सेना के साथ उसी मार्ग से पार उतरा। सिकन्दरो से दो कोस पर डेरा खड़ा हुआ। यह सुन कर शत्रु की सेना में खलबली मच गई। दूसरे दिन सिकन्दरे में डेरा पड़ा, रणभूमि में दोनो दल में केवल दो कोस का अन्तर रह गया।

पूस सुदी १५ सं० १७६९ * बुधवार चौदहीं मुहर्रम सन् ११३३ † हिज्री को शुभ मुहूर्त में युद्धारम्भ हुआ। सबेरे से दोपहर तक खूब पानी बरसा। पानी खुलने पर घमासान युद्ध हुआ। एक पहर घोर युद्ध हुआ। ( दोनों ओर के सरदारों का नाम दिया है ) इधर हज़ारों की गिनती थी परन्तु उधर लाखों ही थे, परन्तु ये दृढ़ता से उनका सामना करते रहे।

---

* मिस्टर इर्विन साहब ने दूसरे इतिहासों की जाँच तथा गणित के अनुसार इस युद्ध का दिन माघ बदी १० सं० १७६९ १३ ज़ुलहिज्ज सन् ११२४ हिज्री ता० ११ जनवरी १७१३ ई० निश्चय किया है।

† इसमें लेखक का भ्रम है। तइसा का तेतिसा लिख दिया है, पर वह भी अशुद्ध है। वह सन् ११२४ होना चाहिए।

इधर से मीर अशरफ़ बढ़े, उधर जुलफ़िकार ख़ाँ ने सामना किया, इतने में सैयद हुसैनअली ख़ाँ पहुँचे, सहायता में इधर से अली असगर ख़ाँ, जैनुद्दीं ख़ाँ, फ़तहअली ख़ाँ, सफ़शिकन ख़ाँ पहुचे। घोर युद्ध मचा। मीर अशरफ़ मारा गया। उसका भाई मीर मुशर्रफ़ महा क्रोध से बढ़ा। फ़तहअली ख़ाँ, सफ़शिकन ख़ाँ और ज़ैनुद्दीन ख़ाँ भी खेत रहे। उधर के भी कई अमीर मारे गए। इतने में सैयद हुसैनअली और जुलफ़िक़ार ख़ाँ का सम्मुख युद्ध आरम्भ हुआ। उधर से सहायता में मुख़्तार ख़ाँ, जाँबाज़ ख़ाँ, जाँनिसार ख़ाँ, लुतफुल्लाह ख़ाँ, दिलेर ख़ाँ, आदि दौड़े। इधर से राजा छबीलेराम, आज़म ख़ाँ, सुलताँ कुली ख़ाँ, शेख़ रसूख़ियत ख़ाँ ने रोका। राजा छबीलेराम का महावत मारा गया, राजा ने स्वयं हाथी को सँभाला। इतने में उनके दामाद राव गुलाब राव पहुँच गए। मुख़्तार ख़ाँ हाथी सहित काम आए। तब राजा गिरिधर बहादुर, दीवान भगवन्त राय कायस्थ का बेटा सुखमराय, बेनीराम नागर, सैयद इमाम शेख़, अहमद ख़ाँ, शाकिर मुहम्मद, गुलाम मोहैयुद्दीनख़ाँ, सुलताँ कुली ख़ाँ, आदि ने धूम से धावा किया। इधर से आज़म ख़ाँ उधर से जानी ख़ाँ से घोर युद्ध हुआ। जानी ख़ाँ मारा गया। उधर से लाख सेना इधर से हज़ार थी पर हटा कोई नहीं। तब कुतबुल्मुल्क टूट पड़े। उनके साथ महम्मद ख़ाँ बंगश, शादी ख़ाँ, राजा रतनचन्द, निज़ामुद्दीँअली ख़ाँ के दीवान जकृष्णदास, अनवर ख़ाँ, समुन्दर ख़ाँ, मंजूर सैयद, यादगार बेग आदि थे। उधर कोकिलताश ख़ाँ, आज़म ख़ाँ पर टूटे। सैदराजे ख़ाँ, अब्दुलसमुदअली ख़ाँ, नौशेर ख़ाँ, अबुलग़फ़ार आदि ने घमासान युद्ध मचाया। कुतबुलमुल्क से कोकिलताश

खाँ, महम्मद खाँ बंगश मे आज़म खाँ, शादी खाँ से नौशेरी खाँ, के साथ में युद्ध हुआ। उधर के सैयद गाज़ेखान अब्दुस्समुद खाँ से इधर के राजा रतनचन्द भिड़े। जकृष्णदास, अनवर खाँ, समुन्दर खाँ, मंज़ूर तैयब, साहबराय आदि इधर से टूट पड़े। महा युद्ध हुआ, लहू की नदी बह गई, माँस का दलदल हो गया। (यहाँ से मूल ग्रन्थ छूट गया है। लेखक जी ने और और विषय की कविता लिखनी आरम्भ कर दी है। सारे ग्रन्थ मे छाँट कर इस प्रसंग की कुछ कविता देकर ग्रंथ पूरा कर दिया गया है।)

(इस युद्ध में हार कर जहाँदारशाह दिल्ली भाग गया और वहाँ जुल्फ़िकार खाँ की निमकहरामी से फ़र्रुखसियर द्वारा मारा गया। यह वर्णन स्थानान्तर में देखिए।)

——:o:——

## फ़र्रुख़सियर का राजत्व ।

---:o:---

फ़र्रुख़सियर ने राज्य पर बैठतेही अपने सहायक सैयद अब्दुल्लाहखाँ और सैयद हुसैनअली को प्रधान बनाया। पहिला वज़ीर हुआ और दूसरा अमीरुलउमरा अर्थात् सेनाध्यक्ष बनाया गया ।

सैयदों ने आशा की थी कि बादशाह को अपने हाथ का खिलौना बनाकर रक्खेंगे और वह अपने महल के सुख भोगने ही में मस्त रहेगा हमलोग यथार्थ में राज्य भोगेंगे, परन्तु ऐसा हुआ नहीं । फ़र्रुख़सियर का कृपापात्र ढाके का काज़ी था जिसे उसने मीरजुमला की प्रतिष्ठित पदवी दी थी । अपनी अयोग्यता और सैयदों के बल पर ध्यान न देकर, इसके बह-काने पर उसने सैयदों का जी खटका दिया ।

सैयद हुसैनअली को दिल्ली से दूर करने की इच्छा से फ़र्रुख़सियर ने मारवाड़ के राजा अजीतसिंह पर चढ़ाई करने के लिये उसे भेज दिया, उधर गुप्त रीति से राजा को लिख दिया कि सन्धि के नियमों को तै करने में समय बितावें, पर हुसैन अली भली भाँति जानता था कि उसके आँख की ओट होने में क्या उलट फेर होजायगा, उसने झट राजा से सन्धि की बात तै कर ली, राजा ने भी अपना लाभ देखकर बादशाह के लिखने की कुछ पर्वा नहीं की ।

सैयद हुसैनअली के लौट आने पर यह अविश्वास और

भी बढ़ा। सैयदों ने अपने जीवन की जोखों देखकर अपनी सेना को अपने महल के पास इकट्ठा किया और दर्बार में हाज़िर होना अस्वीकार किया। निकट था कि दिल्ली के भीतर घोर युद्ध होजाता, परन्तु किसी तरह इन नियमों पर यह झगड़ा मिटा कि मीर जुमला बिहार का सूबेदार होकर जाय दिल्ली में न रहे, सैयद अब्दुल्लाह अपने वज़ीरी के पद पर रहें और सैयद हुसैनअली दक्षिण की सूबेदारी पर जाँय। हुसैन अली ने चलने के समय बादशाह से स्पष्ट कह दिया कि यदि मीरज़ुमला फिर बुलाया गया और मेरे भाई के अधिकार में किसी प्रकार का अन्तर पड़ा तो मैं तुरन्त तीन सप्ताह के भीतर दक्षिण से दिल्ली आ पहुँचूँगा।

फ़र्रुख़सियर का जी हुसैनअली से खटकता रहा उसने गुजरात के सूबेदार दाऊदखाँ पन्नी को लिखा कि वह मरहट्ठों से लड़ने के बहाने से हुसैनअली को बुलावे और छल से हुसैनअली का बल क्षीण करे। दाऊदखाँ की वीरता प्रसिद्ध थी इसलिये बादशाह ने उसपर भरोसा किया था। दाऊद-ख़ाँ ने हुसैनअली से प्रगट रूप से शत्रुता आरम्भ की और उसे लड़ने के लिये ललकारा। इस लड़ाई में दाऊदखाँ के सिर में गोली लगी और वह मारा गया, हुसैनअली ने बादशाह की आज्ञा की बाट न देखकर मरहट्ठों पर चढ़ाई कर दी।

इधर मुसलमानों के आपस के वैर विरोध से सिक्खों ने बल पकड़ा। गुरु बन्दा इनका सरदार था। इनके विरुद्ध अब्दुस्समदखाँ की नायकता में सेना भेजी गई। बन्दे की हार हुई, बहुत से सिक्ख मारे गए। बन्दा दिल्ली भेजा गया, ऊँट पर चढ़ाकर वह और उसके साथी नगर में अपमान के साथ घुमाए गए, उसके सब

साथियों का सिर काट कर लटकादिया गया, बन्दे को अनेक प्रलोभन दिए गए पर वह तनिक न डिगा अन्त में उसका छोटा बच्चा उसके सामने हलाल किया गया और उसका कलेजा बन्दे के मुँह पर मलागया। पर बन्दे ने उफ़ भी न किया और शत्रुओं के हाथ मे टुकड़े टुकड़े कर दिया गया।

उधर दाऊदखाँ के दाक्षिण से बुला लिए जाने पर मरहटाँ ने सिर उठाया, चितकिलिचखाँ (जिनका नाम पीछे से निज़ामुल्मुल्क या आसिफजाह की पदवी से प्रसिद्ध हुआ) भेजे गए, उनको हटाकर हुसैनअलीखाँ भेजे गए, इन उलट फेरों से और भी मरहटाँ का बल बढ़ने लगा, छोटे छोटे सरदार जहाँ जो पाते उसे दबाने और दृढ़ किले बनाने लगे।

दाऊदखाँ के दबाने के पीछे, मरहटाँ पर धूमधाम के साथ सेना भेजी गई, मरहटाँ ने यह किया कि जिधर से शाही सेना गई उधर के गाँव खाली करके भागगए और ज्योंही सेना आगे बढ़ गई त्योंही फिर सब अधिकार कर लिया। जब विजय के अभिमान में फूलकर शाही सेना इधर उधर तितर बितर हो गई तो मरहटाँ ने एक साथ उनको धर दबाया और सभों को काट डाला, हुसैनअली को दबाने के लिये स्वयं फ़र्रुखसियर मरहटाँ को उभाड़ता रहा, इस तरह पर सेना के नाश और बिना दिल्ली गए अनिष्ट की आशङ्का से हुसैनअली ने साहूजी से सन्धि करली और दस हज़ार महाराष्ट्र सेना साथ लेकर दिल्ली आया, फ़र्रुखसियर को यह सन्धि अस्वीकृत थी, इससे बादशाह और सैयदों के बीच में और भी विरोध बढ़ा।

इधर मीरजुमला का एकाएकी दिल्ली में आना और

एक काश्मीरी पर, जिसको रुक्नुद्दौला की पदवी मिली बादशाह का विशेष अनुग्रह होना सैयद अब्दुल्लाह को विशेष खटका, बादशाह ने वज़ीर के शत्रुओं से मेल बढ़ाना आरम्भ किया। आमेर के राजा जयसिंह इनमें प्रधान थे, परन्तु और सब सरदार काश्मीरी की प्रधानता से चिढ़ गए थे, वे सब के सब वज़ीर से मिल गए, इधर हुसैनअली भी अपनी सेना के साथ दक्षिण से आगया, राजा जयसिंह ने वज़ीर से सामना करने के लिये बादशाह से कहा, परन्तु उसको खुला खुली वज़ीर से बैर प्रगट करने का साहस न हुआ। इधर वज़ीर और उसके भाई ने नगर पर अधिकार करलिया और फ़र्रुख़सियर को ढूँढ़कर पकड़ लिया और गुप्त रीति से मरवा डाला।

सैयदों ने शाही घराने के एक शाहज़ादे को रफ़ीउद्दरजात के नाम से गद्दी पर बैठाया परन्तु वह तीनही महीने में मर गया, इसके पीछे एक बैमाही शाहज़ादा, रफ़ीउद्दौला के नाम से गद्दी पर बैठाया गया पर वह और भी थोड़े दिन में मारा गया। अन्त में रौशनअख़्तर नामक एक युवक शाहज़ादा गद्दी पर बैठाया गया और वह मोहम्मदशाह के नाम से दिल्ली के तख़्त पर विराजमान हुआ।

———:o:———

# ग्रंथ और ग्रंथकर्ता।

---:o:---

प्रसिद्ध कवि श्रीधर उर्फ़ मुरलीधर के ग्रंथ तथा कविता का संग्रह मुझे मित्रवर बाबू जगन्नाथ दास (कवि रत्नाकर) से मिला था। यह कवि अच्छा सुकवि था। इसके कई ग्रंथ और स्फुट कविताओं का इस प्रति में संग्रह है। एक ग्रंथ इसमें राग रागिनियों का है, एक नायिका भेद का, एक जैनियों के मुनियों के वर्णन का, कुछ स्फुट श्रीकृष्ण चरित्र की कविता, कुछ चित्रकाव्य, फ़र्रुख़सियर का जंगनामा और उस समय के अमीर, राज्यकर्मचारियों तथा राजाओं की प्रशंसा की कविता हैं। इनकी कविता से विदित होता है कि यह कवि बड़ा मसख़रा और खुशामदी था और लोगों की बड़ाई गा गा कर कविता करते फिरने का इसका व्यवसाय था।

नवाब मुसल्लिहख़ाँ की प्रशंसा की बहुत सी कविता इसने की है। उनकी होली का वर्णन तथा उनकी रसिकता और विलासिता की बड़ी प्रशंसा की है। लोगों के यहाँ लड़का होने पर तथा विवाहादि में पहुँचना और कविता सुनाना इसका काम था।

बाबू शिवसिंह तथा डाक्टर ग्रिअर्सन ने इनके बनाए कवि विनोद का वर्णन किया है और लिखा है कि वे और कवि मुरलीधर मिलकर कविता करते थे परन्तु ऐसा नहीं है, जंगनामे से यह स्पष्ट हो गया कि श्रीधर का ही प्रसिद्ध नाम मुरलीधर था और वह प्रयाग में रहता था। डाक्टर ग्रिअर्सन

ने इनका समय सन् १६८३ लिखा है परन्तु जंगनामा संवत् १७६९ ( सन् १७१२-१३ ) में बना है अतः मिस्टर इर्विन ने इनका समय कम से कम तीस वर्ष पहिले मानना उचित समझा है।

प्रयाग में एक कवि मुरलीधर मिश्र भी हुए हैं। इनका भी ठीक इन्हीं का सा स्वभाव तथा व्यवसाय था। इनका बनाया रामचरित्र नामक ग्रंथ हस्तलिखित प्रयाग के भारती-भवन में संरक्षित है। मैं ने उसका वृत्त लिख लिया था उसे प्रकाशित करता हूँ। यह ग्रंथ संवत् १८१८ में बना था। कवि ने लिखा है कि सब जन्म स्वार्थ में बिताकर अब यही निश्चय करके कि अंत में राम के गुण गाकर परमार्थ सिद्ध करना चाहिए, इस ग्रंथ को बनाया। यह दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के दर्बार में था। जब नादिरशाह ने लूट मार कर दिल्ली को तहस नहस कर दिया तब यह भी उदास होकर रामचरित्र वर्णन में प्रवृत्त हुआ। इन्हों ने अपनी वंशावली का वर्णन इस भाँति से किया है कि यमुना गंगा के बीच (प्रयाग?) एक गाँव है वहाँ परमानन्द नामक बड़े पंडित थे। उन्हें अकबर ने अपने दर्बार में स्थान दिया था और प्रसन्न होकर शतावधानी की पदवीं दी थी। उनके बेटे कपूरचन्द, उन के पुरुषोत्तम ( ये बड़े कवि थे, और शाहजहाँ के समय में राज्यमान्य थे ) उनके प्रेमराज, उनके पृथ्वीराज ( ये बड़े कवि थे ) उनके दिनमणि ( ये बड़े प्रसिद्ध ज्योतिषी थे ) उनके कई बेटों में यह मुरलीधर हुए।

मिस्टर इर्विन की ओर से मौलवी अबदुल अज़ीज़ नामक एक सज्जन भितरी जिला ग़ाज़ीपुर के रहने वाले प्राचीन

ग्रन्थोँ का संग्रह करते फिरते हैँ, उन्होँ ने पहिले इस ग्रंथ तथा इसके साथ की बहुत सी कविताओँ की नकल कराई और मिस्टर ईलस साहब जज के द्वारा यह ग्रंथ लिया, परन्तु मुझे खेद है कि उन्होँ ने इर्विन साहब को लिखा कि यह ग्रंथ राधाकृष्णदास से बड़ी कठिनता से ईलस साहिब की कृपा से मिला। साहब ने इस ग्रन्थ को एशियाटिक सोसाइटी मेँ छपवाया। उसी की भूमिका मेँ उन्होँ ने यह वृत्तान्त लिखकर मिस्टर ईलस को विशेष धन्यवाद दिया है। अस्तु इर्विन साहब ने इस ग्रंथ का बहुत सा अंश छोड़ दिया है।

इर्विन साहब ने लिखा है कि इसमेँ कई एक ऐतिहासिक घटनाएँ बहुतही अशुद्ध लिखी हैँ, और यह सैयद अबदुल्लाह का पटने मेँ रहना जब कि वह इलाहाबाद मेँ था, मीर जुमला का मोजईन से लड़ना सर्वथा अशुद्ध है और लड़ाई का दिन और संवत् असन्नही अशुद्ध है। पहिली घटना के सम्बन्ध मेँ यह कहा जा सकता है कि कदाचित सैयद अबदुल्लाह दो एक दिन के लिये इलाहाबाद से पटने आए हों तो क्या आश्चर्य था क्योँकि प्रयाग और पटने मेँ इतनी दूरी नहीँ है कि आना कठिन हो। दूसरी घटना मेँ साहब को ग्रंथ के अनुवाद मेँ भ्रम हो गया है, मूल ग्रंथ ( पंक्ति ३० ) मेँ लिखा है—

तहँ मीर जुमला बीर बुद्धि गँभीर बाहु बिसाल।
मढ़ि रह्यो मौजुद्दीन की कटक गहि करवाल॥

यहाँ "मढ़ि" रह्यो का अर्थ मिल रहा है अर्थात् मीर जुमला छल से मौजुद्दीन से मिल गया था और वहाँ के समा-

चार फर्रुखसियर को लिखता था, साहब ने इस पद का अर्थ किया है—

The Mir Jumlah, a noble, clever, deep, strong of arm,
Fought Mauzuddin's army, grasping the sword.

दिन और संवत में कुछ तो लेखक को भ्रम हो सकता है और कुछ यह भी सम्भव है कि युद्धारम्भ के कुछ पहिले ही शुभ मुहूर्त में यात्रा की हो और उसी का वर्णन किया हो, परन्तु ग्रंथ के वर्णन से यह स्पष्ट है कि कवि स्वयं आँखों देखी घटना कहता है, इस बात को साहब भी मानते हैं वह लिखते हैं—

On the other hand some of the details as to localities add to our previous knowledge, and the copious use of actual names, shows to my mind, that the author either was present in the army or wrote immediately afterwards.

जो कुछ हो यह ग्रंथ विशेष उपयोगी समझकर प्रकाशित किया गया है, आशा है कि इससे पाठकों का मनोविनोद हो।

२०-१२-१९०४ श्री राधाकृष्णदास।

# फर्रुखसियर का

# जंगनामा।

## दोहा।

सुमुख कपिल एकरद विकट, भालचंद्र गननाथ।
लंबोदर शंकर तनय, आठ सिद्धि पद साथ॥
लंबोदर शंकर शिवा, बटुक वीरबर पाइ।
कबि श्रीधर कीन्ही कथा, गुरु सारद पद ध्याइ॥
श्रीधर मुरलीधर उरफ, द्विजबर बसत प्रयाग।
रुचिर कथा यह साह की, बढ़यो कथन अनुराग॥
फरुकसियर से साह को, बरनौं प्रबल प्रबंध।
अरु करतूतें सबन की, जे अमीर सम कंध॥
चीठी चली महाजनी, भई एकाएक चाह।
छांड़ि देह सुरलोक को, गए बहादुरसाह॥१०॥
सुनी खबरि एकबारगी, फर्रुकसियर उदार।
राखि फौज अलगारही, चलिये यहै विचार॥
बकसी आजमखान को, कीन्हो हुकुम बुलाइ।
फौज राखिए जाय अब, जेती राखी जाइ॥
फेरि खबरि दिन दसक मे, सौंची पहुँची आइ।
जुलेफिकार उमराव सब, मिले मौजदिहि जाइ॥
जुलफिकारखा फेरि सब, फौज दगा किय भंग।
नातरु वैसे बलिन्ह सो, को जीतत सफ जंग॥
मोजद्दीन सिर छत्र धरि, कुनबा कुटिल पढ़ाइ।
चल्यो दिल्ली को, चहुँ दिसा, लिखि फरमान पठाइ॥२०॥

## तोमर छन्द ।

यह खबरि पहुँची तथ्य । तब फरुकसियर समत्थ ॥
सिगरे बुलाइ अमीर । सब सो कृपा करि बीर ॥
सब सों दियो फरमाइ । अब फौज राखहु जाइ ॥
यह हुकुम करि सुभ बखत । धरि छत्र बैठो तखत ॥
सब साह के दिल साज । तब लगे राखन फौज ॥
सजि अब्बदुल्लह खान । किय प्रथम कोपि पयान ॥
हुअ साह को इरशाद । पहुँचो इलाहाबाद ॥
सूबा व मय सरकार । सब कियो अमल उदार ॥
रनबाँकुरा बलवान । करि रह्यो कायम थान ॥

## छन्द ।

तहँ मीरजुमिला मीर बुद्धि गंभीर बाहु बिशाल ॥ ३० ॥
मंडि रह्यो मौजुद्दीनही को कटक गहि करवाल ॥
सूबा सबै मनसूब बाज बिडारि डारी चाल ।
अरु साहि को सिगरी हकीकत लिखत तब ततकाल ॥
तब मीरजुमला बीर अरज लिख्यो सुपत्र उदार ।
इन सैदराजे खान कीन्हो प्राग- सूबेदार ॥
वह चल्यो साजि हिरौल आगे सैद अबुलगफार ।
पीछे पठायो महा दल दै एजुद्दीन कुमार ॥
यह मीरजुमिला वीर की सब अरज पहुँची तथ्य ।
शाहानशाह जहांपनाह सु फरुकसियर समत्थ ॥
सुनि कै अमीरन ओर हेर्यो कोपि कै समरत्थ ॥ ४० ॥
बोल्यो हुसैन अलीयखाँ रनबाँकुरा गजहत्थ ॥
इकबाल शाहनशाह की इसमें न आन की आन ।
इनको अकेलो वै सैयद अब्बदुल्लह खान ॥

तिनको कृपा करि बेग सो लिखि भेजियो फरमान।
वह मारि फौज बिदारि दल रन मारिहै घमसान॥
शाहानशाह लिख्यो जबै फरमान पहुँचो आइ।
तब सैद अब्दुल्लाहखा लीन्हों सु अदब बजाइ॥
वह हुकुम सिर धरि दै नगारो सुमिरि प्रभु को पाइ।
डेरा सु आलमचंद करि और राह रोक्यो जाइ॥
पुनि आय थिर करि रह्यो थानो गह्यो प्राग करार॥ ५०॥
भाई पठायो जंग को सब संग दै सरदार॥
तब सज्यो सैफुद्दीअलीखां बंक बीर उदार।
भाज्यो निजामुद्दी-अली-खा कोपि गहि करवार॥
साज्यो सिराजुद्दी-अली-खा बीर औवल बान।
फिर सज्यो राजा रतनचंद गयंद गहि किरवान॥
फिर मीर मुहसनखान साज्यो बीर अनवर-खान।
साज्यो समुंदर-खान अरु इदगारबेग जवान॥
मिरजा वली बहरामबेग चढ्यो गहे कर चाप।
जेहि बाप बरकंदाजखा सु खिताब पायो आप॥
अरु सज्यो त्यों दरवेशअली खां सैद बारत छाप॥ ६०॥
साजे वली सरदार केते शत्रु दारन दाप॥

## हरिगीतिका छन्द।

इत अड़े आलमचंद उत कोह उन डेरा कियो।
भिनसार होत दुहूँ दिसा दुहुं दलपती डंका दियो॥
इत ए बढ़े उत वे चढ़े मन बढ़े दुहु वागे लियो।
दलभार सों बिकरार महि रजधान सूरज जो पियो॥
तब भयो देखा देख दुहुँ दल दुहूँ दल चापें चढ़ीं।
बाजीं बंदूकैं रहकलें हथनाल धूम घटा मढ़ीं॥

तब विज्जु चमकनि झमकि त्यों शमशेर म्याननि तें कढ़ीं।
लागी झराझरनानु गटपट रुधिर की सलिता बढ़ीं॥
ललकारि हाकनि देत सावत दपटि दुहु दल धावहीं॥ ७० ॥
गरवी मगरबी कर गहे झुकि झपटि चोट चलावहीं॥
छिन जात धाइ उठाइ ए छिन अटल अरिवर आवहीं।
छिपद्दर उसल पसल भट रनसिन्धु पार न पावहीं॥
कहुं लरत सैयद बारहापति रतनचंद कहू लरें।
कहुं लरत बरकंदाजखाँ कहुं मार मुहसनखां अरें॥
कहु लरत अनवरखां समुन्दरखाँ कहूँ पैंजें करें।
बाटी लराई लरत कहु इद्गारबेग रिसें भरें॥
जब लख्यो उसला पसल सैफुद्दीअलीखाँ कोप के।
दौर्‌यौ सु निजमुद्दी-अली-खाँ फौज को आटोप के॥
आगे सिराजुद्दीं-अली-खा मुझ्यो रन चित चोप के॥ ८० ॥
बिकरार अरिदल बीच अंगद सो रह्यो पद रोप कें॥
तब बीच सैयद भए चहुदिसि लियो फौजन घेरि कें।
तरवार तिहुं भाइन गही हरखित हरीफन हेरि कें॥
मृगराज ज्यों मृगझुंड पर झहरात हगनि तरेरि कें।
भारी भमाभम शत्रु के सिर पर सिरोही फेरि कै॥
तेहि बीच झुकि पर ओर तें तरवारि झम झम झम परी।
झर लगी तीरन की महा मनु लगी सावन की झरी॥
तब सिराजुद्दीं-अली खान की देह घन घायनि भरी।
भुव गिरत गिरत मचाइ राख्यो लोह वार कराकरी॥
यह बारहे के बालकनि को लखो अति गाढ़ो हियो॥ ९० ॥
सैयद सिराजुद्दीं अली खाँ तब शहादत को लियो॥
हरखंत हूरनि हाथ को पुर प्रेम सों प्याला पियो।
करि हाल निमकहलाल ओप सिपाह सूरनि को दियो॥

यह शोर भो चहु ओर तें दौरे सबै सरदार हैं ।
तित डारि ढालैं टारि कूदैं फारि जिरह अगार हैं ॥
अरु छोरि बखतर तोरि म्यानिनि गह्यो करनि कटार हैं ।
चमकैं चहू नेजा सुनै झमकैं घनी करवार हैं ॥
इमि दौरि कै चहुँ ओर तें पर फौज घेरी जाइ कै ।
तह तीर बरछा बान गोली अंग अंग अगाइ कै ॥
शमशेर बार झरा झरी कर कर कटारिन घाइ कै ॥ १०० ॥
झुकि झपटि झुरमुट खेलि अरिदल दियो महि बिथराइ कै ॥
लोटैं किते भूमैं परे कोउ घाइ सों घूमैं खरे ।
कोउ भए मुरछावंत डर सों ते बिना मारे मरे ॥
सरदार अबुलगफार के अंग अंग घन घायनि भरे ।
रनभूमि में पायो नहीं जानै कहा किहि लै धरे ॥
इमि कूटि भटकनि कटक लूटनि लगे दरबर बे दरा ।
जिहि पाय में पनही नहीं भए स्वार तेऊ पैदरा ॥
बाजे जसीले शाइना में धमक सों धमकैं धरा ।
फर मैं फतूहनि लै फिरैं जस जग्यो सावंत सैदरा ॥
कुतुबुल-मुलुक सों तब मिआँ मंजूर अरज सबै कियो ॥ ११० ॥
बाजे नगारे गहगहे आनंद सों हरख्यो हियो ॥
सुनि कै सिराजुद्दी अली खाँ की दसा गुस्सा कियो ।
आखें करेरी ऐंठि मोछनि दाँत ओठनि में दियो ॥
बोले सु अब्दुल्लाह खाँ अब मैं महा रन माँड़िहौं ।
सिगरी पछाहीं फौज को कर कर कटारिन काँड़िहौं ॥
आए जिते सरदार हैं तिहि प्रान डाड़नि डाँड़िहौं ।
तब सिराजुद्दीं अली खाँ को बैर लै के छाड़िहौं ॥
रन खेत में कुरु खेत सों तरवारि मार मचाइहौं ।
भुज जोर तें पर ओर के सब जीवतै गहि ल्याइहौं ॥
तब शाहि फर्रुखसियर को बंदा बनैत कहाइहौं ॥ १२० ॥

फिरि मीर सैफुद्दी अली खां फतह कै आए जबै।
आए सबै सरदार निजमुद्दीं अलीखा संग तबै॥
आए सबै सरदार सुन्दर जैत वर सोभा फबैं।
तब लियो कंठ लगाइ कुतुबुल मुलुक वीर लखी सबैं॥
काहू दए हाथी बड़े घोरा घने काहू दिए।
काहू इजाफा चाउ सिगार सरोपायनि सों हिए॥
काहू सु मनसब की उमैदन मोहि मन सबके लिए।
एहि भाँति करि सनमान डेरनि वीर वरन बिदा किए॥
दिन और कुतुबुल मुलुक बोले बोलि साहिबराय सों।
लिखि अरज शाहनशाह को सब भेद बात बनाय सों॥ १३० ॥
भाई हुसेन अलीय खाँ कों लिखो सब समुझाइ सो।
जिहिं आइ ह्यां अलगार पहुंचे साजि फौज उपाय सों॥
सुनि लिख्यो साहिबराय माथुर अरज पत्र तहां तबै।
सफजंग की सब बात जैसी भई जौन जहाँ जबै॥
फूटनि पछांही फौज की आमद अमीरन की सबै।
फिरि लिख्यो और लिख्यो हुसेन अलीय खाँ जू को सबै॥
एजुद्दी अलगार पहुंचो कोरड़े डेरो दियो।
राजा छबीलेराम कपट मिलाप अब उनसों कियो॥
कपटै इटाएँ अली असगर खान आगे ह्वै कियो।
उत बात हीं सों मिले दोऊ प्रान तन मन ह्यां हियो॥ १४० ॥
अब जैनदी खां फूटि आयो बीर बाँके साज है।
आयो वली जाँबाजखाँ बैरी बटेरनि बाज है॥
आयो मुजफ्फर अली खाँ बानैत तोरा ताज है।
आयो फकीरुल्लाह खाँ महपार खां अरिगाज है॥
ए सकल खां ह्वै मिलत मोहिं पयान पटना को कियो।
सब चरन प्रभु के देखिहैं वर बदगी जिनकी लियो॥
फिरि अरज इबराहिम हुसेनहि सों सबै बाहि में दियो।

अब आइवो अलगार होइ उ .दवार यहै हियो ॥
यह अरज पत्र सबै लिख्यो पटना सु पहुच्यो जाइकै ।
पहिले हुसेन अलीय खाँ लीन्हाँ लिखा सुख पाइ कै ॥ १५० ॥
बाँच्यो सिराजुद्दी अलीखाँ को दसा पछ्नाइ कै ।
रिस घांटि अरज पढ़्यो सु आपुहिं शाहि के ढिग आइ कै ॥
कीनो अमीरुल उम्मराव सु अरज शाहनशाह सो ।
रिस रहनि रोकी नाहिं क्योंहूँ अनुज के दुख दाह सो ॥
पाऊँ हुकुम अलगार पहुँचों जंग जैनक चाह सों ।
ललकारि कै छुछुकार फेरों सेज दीनहिं राह सों ॥
तब हुकुम कीन्हो शाह दिन द्वै अब तहम्मुल कीजिए ।
बाँके बनैत अमीर तिनको बिदा आगे दीजिए ॥
अब पेजुद्दीं सों रिस कहा तदबीर सो गहि लीजिए ।
मौजदीं पर साजिके चतुरग फौज चलाजिए ॥ १६० ॥

## पादाकुल छन्द ।

और रोज भिनसार भयो जब ।
सज्यो शाहि दीवानखास तब ॥
मिसिल मिसिल ठाढ़े अमीर सब ।
लियो मुरतुजाखान वली अब ॥
सैद मुरतुजा खां बढ़ि आयो ।
शहनशाह तासों फरमायो ॥
फौज साज चाह्यो चित लीजे ।
प्रथम पछांह पयानो कीजे ॥
हुकुम होतही चले महाबल ।
सैद मुरतुजाखान साजि दल ॥ १७० ॥
कूच कूच अलगार पयानो ।
कियो बहादुरपुर थिर थानो ॥

हजरत हुकुम फेर यह कियो ।
बिदा सु आजमखाँ को दियो ॥
आजमखा बकसी बिशाल बल ।
चढ़यो साजि चतुरंग दीह दल ॥
साले खाँ महमद शुजा सबल ।
महमदसेन हुसेन सजि दल ॥
तईनात केते अमीरबर ।
चलयो तेज सफजंग जैतबर ॥ १८० ॥
सज्यो गुलाब मेहदीखाँ तहँ ।
आजम खाँ को अनुज जंग कहँ ॥
आजम खाँ के अनुज चारिये ।
बीर जैत बर और चारिये ॥
साज्यो मीर अजीज खान जब ।
सुबलि हेम खां लिय सनाह तब ॥
सुलताँ कुली खान जब सज्जिय ।
तब महमद हयाति गल गज्जिय ॥
नेकनामखाँ बीर बंक मन ।
सज्यो खैरुदीँ अलीखान रन ॥ १६० ॥
सज्यो दिलावर खाँ दिलेर जहँ ।
श्रीधर महमद अमाबेग तहँ ॥
तईनात एते अमीर बर ।
चलयो तेज सफजंग जैत बर ॥
कियो हुकुम फिर बादशाह तहं ।
फर फाजिल फरजंदखान कहँ ॥
सज्यो सलाबतखान बोल लहि ।
सैफखान भो बिदा सैफ गहि ॥

सजे नंद सादाति खान के ।
ईरापति माजिंद्रान के ॥ २०० ॥

जैतवार किरवान बान के ।
बीर सबै जग के गुमान के ॥
तईनात उमराव राव अति ।
गनी जाति ना बीर भीर अति ॥
बीर मीरजुमला कृपान लिय।
जत्थ तत्थ रन पत्थ बीर बिय ॥
बीर मुकर्रम मीर लोह घन ।
जंग मीर अकरम उछाह मन ॥
शुजा शुजातुल्लाह जंगमन ।
सगी बेग सफजंग संग तन ॥ २१० ॥

शेख रहमतुल्लाह बीर तति ।
चल्यो साजि माजिंद्रान पति ॥
सजे संग सब जंग जैत बर ।
चले साजि दल बल पछाँह पर ॥
पूर्व सिन्धु दक्खिन समुद्र तहँ ।
सजि भज्यौ तैमूरखान कहँ ॥
चहुँ ओरनि यों फौज रेल भरि ।
और रोज बैठे दिवान करि ॥
आयो अशरफ़ खाँ अमीर तहँ ।
अलगारनि तजि मौज.ान कहँ ॥ २२० ॥

एजुद्दीन को दल मझारि करि ।
काढ़ि आयो कर बर कृपान धरि ॥
किय मुलाजिमत पादशाह सों ।
भर्यो अंग आनंद उछाह सों ॥

पादशाह अतिही कृपाहि किय ।
ताहि खान-दौरौं खिताब दिय ॥
कियो आज तिन सज सलाह तब ।
अलगारनि चलिए सिताब अब ॥
शहनशाह तब सुदिन स्वच्छ धरि ।
बसं और थल पै पड़ाव करि ॥ २३० ॥
भयो शोर चहु ओर जोर तहँ ।
कूच कूच अलगार पछाह कहँ ॥
इब्राहिम हुसेन मिलियो तह ।
कियो बिदा भागलपुर तेहि कहँ ॥
मिल्यो जैनदी खान बीर मद ।
लह्यो बहादुरखां खिताब हद ॥
मिल्यो आनि जांबाज-खान तित ।
सरोपाउँ दीनो सुमानि हित ॥
मिल्यो फकीरुल्लाह-खान तब ।
नव मुलाजि सु सज संग सब ॥ २४० ॥
गैरतिखान अमीर थम्भ धरि ।
पट्टन सूबेदार चारु करि ॥
अलीनकीखाँ बीर पंज करि ।
रह्यो चाहि बुनगाह खग्ग धरि ॥
सजे सूर सावंत संग बर ।
सुब अमीर बानैत जैत कर ॥
सज्यो हुसेन अलीय-खान बल ।
महाबीर उमराव अमीरल ॥
है हिरोल प्रथमहि पयान किय ।
सकल जैत सफजंग संग लिय ॥ २५० ॥

---

(२२७ पंक्ति) असल कापी में "अज" पाठ था ।

सुब इनायतुल्लाह खान जहं ।
शुजा शुजातुल्लाह खान तहं ॥
तसु हिरोल हुव मीर मुशर्रफ ।
करत फारि सफजंग साफ सफ ॥
संग मीर महमद-हयाति तसु ।
मकतजंग इन रचकबीर रसु ॥
बुजुरग मीर मरफ सनाह लिय ।
मीर मुशर्रफ भुज बिसाल बिय ॥
असद अली खा युद्ध धनुक धर ।
सहस शत्रु बर हतक एक सर ॥ २६० ॥
आतसखाँ आतस समान रिसि ।
धूम धार सजि करत ग्रास निसि ॥
इमि हिरोल सैयद पयान किय ।
सजि हिरोल जिन्ह फतह संग लिय ॥
बर अमीर सब शहनशाह के ।
सजे संग सज्जित सनाह के ॥
सज्यो खानदौरा सु बहादुर ।
समसामुद्दौला सिपाह पुर ॥
सज्यो मुजफ्फरखां फतूह कर ।
समसामुद्दौला सु वीरवर ॥ २७० ॥
नूरुल्लहखां सहज साज सजि ।
रुखो सत्व वीरत्व जाहि छाजि ॥
सज्यो इनायतखां सनद्ध तब ।
दोस्तअलीखाँ सजि सनाह सब ॥

---

( २७१ पंक्ति ) "सज सह साजे" पाठ असल में है, "सहज साज सजि" पाठ होने से ठीक होता है ।

चली महम्मद कर कृपान लिय।
समसामुद्दौला पयान किय॥
सजि सादाति खान बहादुर।
जासु नेद सुब सुबे बहादुर॥
जिन जिन को तब हुकुम शाह दिय।
साजि फौज प्रथमहिं पयान किय॥ २८०॥

खानजाद खां जंग साज किय।
शाइस्ता खां जेहि खिताब दिय॥
सज्यो गाजियुद्दीनखान तब।
सज्यो और केतक अमीर तब॥
रुस्तमखां रुस्तम समान दिल।
किते और श्राधर कर फाजिल॥
सज्यो संग दाऊद खान असु।
बान दुपट्ट बाज जासु जसु॥
सज्यो तकरुब खान चारु दल।
आलिम आलिमजंग बाहुबल॥ २९०॥

अशरफ खां सादर सदूर सजि।
रह्यो शुजायति इलम रोज रजि॥
जेह अमीर खां कर फतूह लिय।
काबुल अटक तुराह साफ किय॥
तासु नंद अम्मीर खान सजि।
मीर खान बहु संग तेज रजि॥
सैफुल्लहखां बीर सज्जि दल।
मिरजा कासिगबेग खां सबल॥
सुलतां बेगहिँ खाँ सनाह लिय।
फतहुल्लह खां सुरन सज्ज किय॥ ३००॥

सज्यो बीर अफरासियाब खाँ ।
डील पील बल कर फतूह दाँ ॥
तासु अनुज लघु मीर सज्ज किय ।
महमद बासं खाँ सनाह लिय ॥
फतह अली खाँ कर फतूह कर ।
कोप तोप आटोप संग धर ॥
गुरु राजा गंधर्वसिंह तहँ ।
सज्यो फौज सन्नाह युद्ध कहँ ॥
सज सनाह तव शिकिन खान किय ।
धनुक बान गुद्धर कृपान लिय ॥ ३१० ॥
सज्ज गुलाब अलीय खान किह ।
जुलफिकार खाँ हुव खिताब जिह ॥
सज्यो बीर मुमताज खान बल ।
जंग जैत कर संग गोत दल ॥
रन हिरौल की होत जुसामिल ।
फर फाजिल फतूह कर कामिल ॥
सज्यो बीर इमत्याज खान तहँ ।
बल कृपान इमत्याज तेज जहँ ॥
तासु नंद जम कंद तेज बर ।
बीर बान घन रन फतूह कर ॥ ३२० ॥
जंग साज दरबार खान किय ।
फर फतूह कर बीर संग लिय ॥

---

(३१० पंक्ति) हस्त लिखित में "कृन लिय" है । इसका कोई अर्थ समझ में न आने से "कृपान लिय" पाठ कर दिया है ।

(३१९ पंक्ति) हस्तलिखित में "ताज" लिखा है, किन्तु "तासु" से ठीक अर्थ होता है ।

सज्यो मुजफ्फर अलिय खान दल ।
अकबर अलिय खान सज्जितबल ॥
सबल सैद अनवर खाँ सज्ज्यो ।
आज फौज जम रस जेहि छज्ज्यो ॥
तासु संग हुव साजि सनाह बर ।
वीरहु जब्बर खान जैत बर ॥
बैरम खाँ बाँको विशाल मन ।
सुब रसीद खां कियउ जैत पन ॥ ३३० ॥
सज इलायची बेग रुद्र रसु ।
बहादुर दिल खाँ खिताब जसु ॥
इख्तियार खाँ जग बाज चित ।
मुखलस खां सज्ज्यो फतूह हित ॥
खोजे अबदुल्लाह युद्ध धन ।
खोज रहमतुल्लाह तेज तन ॥

## अधमा ।

सकल मीर अमीर सज्जिय ।
अरसला खाँ को हुकुम किय ॥
पेश खानो लै पयानहु ।
कूचअलगर ठीक ठानहु ॥ ३४० ॥
अरसला खां हुकुम धारो ।
चढ़्यो साजि दल दै नगारो ॥
पेशखानो लै पयानेउ ।
पाँच कोस पयान ठानेउ ॥

---

(३३० पंक्ति) हस्तलिखित प्रति में "प" लिखा है, किन्तु "पन" होने से शुद्ध होता है ।

फाजर शाहंशाह साज्यो ।
सकल बृंद गयंद गाज्यो ॥
बजी नौबत गहगही तब ।
भई नौबत रावरी अब ॥
घोर धौंसा धुनि धकारत ।
फतेह फतेह मनु पुकारत ॥ ३५० ॥
होहु हो करनाइ बाजत ।
शहनशाहहिं सगुन साजत ॥
सगुन सो सुरनाइ बाजी ।
सिद्धि राम करी जुसाजी ॥
झारु झारु बझारु झनकत ।
खनन लागहिँ घंट खनकत ॥
फीलवार निसान झहरत ।
मनहुँ आग फतूह फहरत ॥
मानछत्र अनूप राजत ।
इन्द्र सी प्रभुता विराजत ॥ ३६० ॥
झालरी मुकता सुलच्छक ।
मनहुँ तारा छत्र रच्छक ॥
आफताब बिहाँस कँकर ।
मनहुँ रक्षक संग दिनिकर ॥
तोग सुंदर मार माही ।
सगुन की मनु देत ग्वाही ।

## छप्पय ।

फ़र्रुखसियर समत्थ शाहशाहाँ दल सज्जयो ।
पक्खर पक्खरि बहुल बार बारन दल गज्जयो ॥

---

( ३५९ पंक्ति ) असल कापी में "खनखकत" पाठ है ।

श्रीधर धौंसा धमक घोर दसहूँ दिसान भर।
चमकत नेजे फहर बान बैरख निशान वर ॥ ३७० ॥
भुव दलत मलन जेहि दिसि चलत, सक्क सोर चहुं अक हुव।
अति अक धुंधरित धूरि महि, आफताब भ्रुव लोक धुव ॥
कौन सबल बल उथपि निबल बल काहि सुथप्पिहि।
केहि महीप को मुलुक मीडि अब काहि समप्पिहि ॥
काहि पांय गज रज्ज करिहि केहि पील पीठि पर।
खग्ग धानिहिं केहि थरिहिं दरिहिं केहि तमकि तेग तर ॥
अबहि मँड़हि खंडहि सो केहि, बड़ गढ़ गढ़पति थरथरयो।
सजि शहंशाह फर्रुक सियर, सो अब श्रीधर हय पक्खरयो ॥

## दोहा।

इमि सजि शाहनशाहजू, कीनो कोपि पयान।
एलगारनि के कूच को, कियो हिंय ठिकठान ॥ ३८० ॥
कूच कूच एलगार सों, खजुरा पहुचे आय।
आजमखाँ सज फौज सों, परसे प्रभु के पाय ॥
साजि बहादुर पुर मिलयो, सैद मुरतुजा खान।
उतरि बनारस इंद करि, एलगरि कियो पयान ॥
आनि बसेरे बीच के, झूसी कियो मुकाम।
आए संग महाबली, हटिगे निमकहराम ॥
सैयद अबदुल्लाह खाँ, की मुलाजिमत आय।
की, मुलाजिमत संगही, जेतक संग सहाय ॥
हाथी घोरे पालकी, टकी फिरंगी कोर।
सरो पाँव सरपेच सज, जगा मन सब ओर ॥ ३६० ॥
शहंशांहि दीनो तिन्है, कुतुबुलमुल्क खिताब।
दियो इजाफो जौन जेहि, मनसब को असबाब ॥

सेतु बाँधि सुरसरि उतरि, प्राग सु पश्चिम ओर।
चारि मुकाम तहाँ किए, आगे दौरादौर॥
मिल्यो तितै फरजंद खाँ, जगत जासु किरवान।
सबल सजावति खाँ मिल्यो, सैफखान बलवान॥
करे निकट महेथा मिल्यो, आइ छबीलेराम।
चारि हजारी राज पद, तिन्ह को भयो सलाम॥
अलीय अस्गर खान जू, मिल्यो आनि हथ ग्राम।
चौ हजारि मनसब लह्यो, खानजमाँ खाँ नाम॥ ४०० ॥
पूरब छोड़यो कुंवर पुर, पश्चिम बिंदुकी ओर।
बीच शाहि डेरा कियो, भयो दुवन दल सोर॥
पश्चिम फतिहा बाद तजि, पूरब बिंदुकी ग्राम।
ऐजुदीन डेरा दियो, सकटक किने मुकाम॥
खारबंद खंदक खनी, कटक चारिहूं कोट।
चुने अराब अनगने, भरी फौज तिहिं ओट॥
दुहूं महाबल फौज सों, तीनि कोस को बीच।
रची बीच रनभूमि तित, मँची दंति मद कीच॥
शाहिजादो हिरउल कियो, दलपति शाहनशाह।
सजि दलपति जिन शाहियें, ते कीन्ही तिन चाह॥ ४१० ॥
अबदुल्लह खाँ बंकरन, हुसेन अलीखाँ माल।
रनथंभन आगे भए, कुतुब कूड़री बाल॥

## मधुभार छन्द।

सज्यों अबदुल्लाह खाँ जित।
सज हुसेन अलीय खाँ तित॥

(४११ पंक्ति) हस्तलिखित प्रति में "म" है, परंतु ४१२ प्रति के अंत के पद में "बाल" है; अतः "म" से "माल" पाठ कर दिया है।

तित इनातुल्लाह खान सजि ।
रिस शुजायति अलीखान रजि ॥
तित मुशर्रिफ मीर रिरहद ।
संग सैद हयाति महमद ॥
मीर बुजुरुक मीर अशरफ ।
फोरि डारत फरनि की सफ ॥ ४२० ॥
फतेह अली सैद संगी ।
सैफ सैफुल्लाह जंगी ॥
अमद अली खाँ बीर धायो ।
अस्व आतश खाँन पायो ॥
सज्यो रहमति खाँन बल हद ।
मुत्तहौवर खान जेहि पद ॥
कोपि रत्तनचांद राजा ।
बारहा पति संग साजा ॥
सैद अनवर खाँ धनुद्धर ।
मीर मुहसन खाँ सज्यो फर ॥ ४३० ॥
सज बरकंदाज खाँ हुव ।
बीर बरकंदाज खाँ सुव ॥
सुव समुंदर खाँ सज्यो जसु ।
नंद ज्यों इदगार बेगसु ॥
सैद श्री दरवेश महमद ।
तित मियाँ मंजूर शुभ कद ॥
हसन खाँ दीवान प्रागी ।
देग तेगहुँ किति जागी ॥
सजि मुजफ्फर अली खाँ सद ।
बान तोरा बाज जेहि पद ॥ ४४० ॥

बारहाँ पति कोप छायो।
साजि उत्तर ओर धायो॥
जैनदीँ खाँ युद्ध योधा।
चढ्यो उत्तर ओर क्रोधा॥
तितहिँ दल जाँबाज खाँ के।
डाँकि मोरचनि बीर हाँके॥
सजि छबीलेराम आयो।
ओर दक्खिन धमकि धायो॥
अमीनुद्दीँ खान जंगी।
भयो दक्खिन फौज संगी॥ ४५० ॥
पूर्व दक्खिन बीच सज्ज्यो।
बीर आजम खाँ गरज्ज्यो॥
सज गुलाब मोहैयुदीँ खाँ।
बीर आजम खान जँह घाँ॥
सज तकर्रुब खाँ सुलच्छिन।
हाँकि जय जय जय कर च्छिन॥
अली असगर खान जंगी।
बारहा पति बीर संगी॥
खोज अबदुल्लाह सज्ज्यो।
सुब रहमतुल्लाह गज्ज्यो॥ ४६० ॥
पूर्व उत्तर ओर रोप्यो।
खान दौरा बहुत कोप्यो॥
दल मुजफ्फर खान सज्ज्यो।
खान दौरा बीर गज्जयो॥

---

(४५९ पंक्ति में) "हाँकि जय ज" करके छोड़ा है, हमने "हाँकि जय जय जय कर च्छिन" कर दिया है।

सज्यो नूरुल्लाह खाँ जित ।
सजि न्यामतिखाँ बली तित ॥
दोस्तखी खाँ शीलता हद ।
संग साज्यो वली महमद ॥
श्री मुजफ्फर अली खाँ जहँ ।
सज्यो अकबर अली खा तहँ ॥ ४७० ॥
तितहिं खरुईा अली खाँ ।
दिज दिलावर खाँ फतह दाँ ॥
उतहि उनको खान दौरा ।
इतहिं सजि यह खान दौरा ॥
संग केतक खान दौरा ।
मनहु उनको खान दौरा ॥
सज्यो इमि समु सामुदौला ।
मड्यो रन बल बाँहु तौला ॥
पूर्व और अमीर जेते ।
शाहिजादे संग तेते ॥ ४८० ॥
सज्यो दल सावाति खाँ अति ।
बीरवर माजिदखाँ पति ॥
सज्यो तित फरजिंद खा दल ।
सुब सलावति खाँ महाबल ॥
सैफखाँ गहि सैफ हाके ।
नंदसुव सावाति खाँ के ॥
मीरखान अमीर खाँ सुव ।
सज्यो तित फरजंद खाँ हुव ॥
मीरजुमिला श्री मुकर्रम ।
शुजातुल्लह मीर अकरम ॥ ४९० ॥

गरजगजे सुहखाम खाँ तहँ ।
सज्यो दल फरजंद खाँ जहँ ॥
संग केतक बीर बाँको ।
सज्यो दल सादाति खाँ को ॥
सज्यो श्री मुमताज खाँ दल ।
दृग तेग विशाल भुजबल ॥
सज्यो दल इमत्याज खाँ तहँ ।
बीर श्री मुमताज खाँ जहँ ॥
कियो खानेजाद खाँ सद ।
भयो जेहि शाइस्त खाँ पद ॥ ५०० ॥
गाजि मुर्दी खाँ महाबल ।
तिनहि रुस्तम खान को दल ॥
सज्यो दाउद खाँ बली तेहि ।
है दुपट्टे बाज पद जेहि ॥
सैफ सैफुल्लाह खाँ गहि ।
बीर सुलता बेग खाँ तहि ॥
बंक कासिमबेग खाँ धुव ।
स्वार फतहुल्लाह खाँ हुव ॥
फतेह उल्ली खाँ पयानो ।
साजि आगे तोपखानो ॥ ५१० ॥
सज्यो अकरास्याब खाँ जहँ ।
सज्यो बासे खाँ बली तहँ ॥
मड्यो तिन दरबार खाँ रन ।
जैतपत्र विशाल करि पन ॥
अरसला खाँ बीर गरबी ।
कर कमो कूवर मगरबी ॥

मुरतुजा खाँ सैद योधा ।
बारहे को बीर क्रोधा ॥
राज श्री गंधर्व सिंहहिं ।
मड्यो पूरब ओर रन महिं ॥ ५२० ॥

सैद अनवर खाँ मड्यो रन ।
देग तेगहु जीतिवो पन ॥
दलहु जब्बर खाँ सज्यो तहँ ।
सैद अनवर खाँ बली जहँ ॥
फकीरुल्लह खान मिरजा ।
सज्यो दल रन धाक खिरजा ॥
इफ्तकारहिं खान सज्ज्यो ।
बीर मुखलस खाँ गरज्ज्यो ॥
सफशिकिन खाँ बंक मनजित ।
सज गुलाब अलीय खाँ तित ॥ ५३० ॥

बीर बैरम खान साज्यो ।
रन रसीदे खाँ गराज्यो ॥
सज इलायची बेग खग गहि ।
बहादुर दिल खान पद जेहि ॥
शाहनशाहि सुफौज बांटी ।
रह्यो आपुन रोकि घाटी ॥
बँटी फौजें दिल्ली जहँ तहँ ।
पर्‌यो खर भर शत्रु दल महँ ॥

## भुजङ्गप्रयात छन्द ।

दुहूँ ओर साजे महा मत्त दंती ।
सजे पक्खरों लक्खकी पूर पंती ॥ ५४० ॥

गड़ादार घेरें सिरी कद्द बंदा ।
गजे मेघ मानो बजें घोर घंटा ॥
घटा श्याम सी दीह ता बिंधिमा पै ।
परी पक्खरें झालरा झूल झाँपै ॥
सजे पक्खरो भक्खरों लक्ख घोरे ।
मनो भानुजू के रथी जोर जोरे ॥
चले चाइ सों चंचले चाल बाँकी ।
दर्‍याई तुरुकी तजीले इरांकी ॥
करें पौन सी पौन की पायदारी ।
अरब्बी गरब्बी खुरीले खँभारी ॥ ५५० ॥
नचै नाटकी से पटी के चन्हावी ।
कछी पीठ पूठों पले नीर रावी ॥
सजे संदली औ समुंदे सुरंगे ।
कबूतो बने फूलवारी सुअंगे ॥
सजे ओज मंजाफ नीले हरीले ।
मुसुकी सजे पंच कल्यान पीले ॥
बड़ ढील के, कान छोटे नवीने ।
सुचौरी खुरी चाकरी जासु सीने ॥
बडे चंचल नैन के, मुक्ख साँचे ।
खुरी पाल झूमै घनी दोप वाँचे ॥ ५६० ॥
सजे साजियों चारिहूँ ओर योधा ।
सजे साज लोहा बँटो कुत्त क्रोधा ॥
पिले चारिहूँ ओर सूबे गरूरी ।
जिन्हों बार के शत्रु की फौज चूरी ॥
कहाँ लौं कहौं फौज में सूर राजे ।
किंतेको बली लै बँदूखें गराजे ॥

सबै सूरवाँ वीर बाँके बनैते ।
सजे साज बाजी चढ़ै हाँक दै ते ॥
कढ़ै फौज सों डाकि घोरे धपावै ।
किते वृह कै के सु भाले फिरावै ॥ ५७० ॥
लख्यो दूसरी ओर रजपूत अनी को ।
चढ़ो कोपि कै पूत दिल्लीधनी को ॥
दुहू ओर ठाढ़ी चमू वाजि रोकैं ।
दुहू ओर की फौज ठाढ़ी बिलोकैं ॥
सु फर्रुखसियर शाहि कै जोर सूबे ।
पिले चारिहूं ओर साजे अजूबे ॥
बजी दीह धौंसानि आवाज अच्छी ।
चहूंघा लखीजे बरच्छी बरच्छी ॥
छुटे त्यों अराबे उठी धूरि भारी ।
धुवां की उठी धुंधुरारी अध्यारी ॥ ५८० ॥
बढ़ै रोशनी ऊपरी बान छूटे ।
मनो आसमानी महा लूक टूटे ॥
पिले चोट को खोट के चारि फेरे ।
पिले ओपची तोपचा यों घनेरे ॥
चहू फौज की बीरता की बड़ाई ।
चमूं शत्रु की चूर कै कै हटाई ॥
बली उत्तरी फौज के गर्व एंठे ।
महा मोरचा भीड़ि कै पेलि पैठे ॥
लख्यो पजुदी बार छूटो दुवारो ।
परी भाग भाग्यो तकै कोह नारो ॥ ५९० ॥
सँभारै न घोरे रथी हेम हाथी ।
सँभारे न कोऊ कछू संग साथी ॥

---

(५८७ पंक्ति में) "गत्र" है, "गर्व" कर दिया, इससे पाठ स्पष्ट होगया ।

किहूँ छोड़ि घोरैनि डार्‌यो हुथ्यारो ।
किहूँ भागि सोँ आगेही पत्थ धारो ॥
करै कोउ हाहा परै कोउ पैयाँ ।
चले रामरे गाँव छैश्शा बकैयाँ ॥
घुसे बीहरो भागि केते निकामी ।
किते को करै बंदि नामी निनामी ॥
किते को गुमानी गरूरे निछाए ।
बड़े हैंसिला कै तिया संग लाए ॥ १०० ॥
तिन्हें छोड़ि भागे छुटी चाल बाँकी ।
गए फूटि ताले फटी हौंस नाकी ॥
सु रोवै असीलें फसीलें सहेली ।
पुकारे खुदा आय दै कौन मेली ॥
गरोढा बरो झाँकि झीकैँ सुरोसैं ।
सबै मौजदीँ को भरे नैन कोसैं ॥
कहूँ बैंदरा को बड़ी धूम धाई ।
चहूँ कुद्ध लुब्बानि लै आग लाई ॥
बरैं छावनी छाँह डेरा सु भारी ।
महा भीम फैली धुवाँ की अँध्यारी ॥ ११० ॥
कहूँ आँच के तेज सो लाल फूटैं ।
कहूँ बैंदरा बीर बाजार लूटैं ॥
कहूँ बाँस की गाँठ फूटैं पटक्कैं ।
चटाचट्ट पाषान भारी पटक्कैं ॥
लुटै केसरी दाख दान्यो छुहारो ।
लुटै चारु कस्तूरिका घन्नसारो ॥
कहूँ होत मोती बरैं चूर चूना ।
चहूँ लै लुटेरे करैं मोट दूना ॥
अरैं चार आचार चूरी चिरौंजी ।

कहुँ कौलगट्टे कसेरू करौंजी ॥ ६२० ॥
जरें औ लुटैं चीर चीरा जरी के।
परे भोट के मोट लूटें परी के ॥
भए बेदरा जौहरी लूटि लूटें।
छिटे ज्वारिलों मोट मुक्तानि छूटें ॥
किती तीं जरें हाय हा रट्ट लागी।
किती कामिनी दामिनी रूप भागी ॥

## दोहा।

यहि बिधि दल सब भंगियो, पजुद्दीन को जान।
श्रीधर कवि आगूँ सुनो, अब सब करौं बखान ॥
अरज कियो इमत्याज खाँ, प्रभु को पाइ प्रसाद।
शाहनशाहि यह शाहि वै, फतह मुबारकबाद ॥ ६३० ॥
कियो खान दौरा हुतो, उनको अंग हरजंग।
नौसेरी खाँ नंद इत, हो हिरोल रनरंग ॥
अबदुल समुद मलीय खाँ, राजे खान अमीर।
सादिक लुतफुल्लाह खाँ, दिल दिलेरखाँ बीर ॥
मौजद्दीन के ये हुते, इतबारी उमराइ।
हजरति के इकबाल सों, सके न रन ठहराइ ॥
पेजुद्दीन को जबरई, लै सब गए पराइ।
पान खाइ आए हुते, पानिप गए गँवाइ ॥
हाथी घोड़े शुतुर रथ, महल बहल सुखपाल।
तोप नगारे रहकले, शुतर नाल हथनाल ॥ ६४० ॥
मुहर जवाहिर को गनै, ढेर ठौर ही ठौर।
ठाढ़े छुटे सराइचे, करी बैदरनि दौर ॥
तहँ ठाढ़े मुमताज खाँ, हजरति निकट बुलाय।

शाहनशाहि कीनो हुकुम, तुम देखो अब जाय ॥
मद मोलक हाथी तुरे, तोप नगारा लेहु ।
और लूटि में जो लहे, तौन ताहि को देहु ॥

## अर्धक ।

करि फतह शाहनशाहजू । हिय भऱ्यो परम उछाह जू ॥
बैठे प्रभात देवान के । सब बोलियो सनमान के ॥
तहँ बजति नौबति घोर है । रह दीप दीप अँदोर है ॥
किय कंचुकी इतमाम को । आए अमीर सलाम को ॥ ६५० ॥
मुकता जवाहिर वारहीं । अँजुरीन लै फिटकारहीं ॥
पुनि भाँति भाँतिन्ह नजरि दै । लै मिसिल ठाढ़े भे सबै ॥
कुतबुल मुलुक अरजी भए । उमराव बोलि बुधो लए ॥
मिलियो मुजफ्फरखाँ तहाँ । कीनो कृपा साहब जहाँ ॥
दीनी खिताब धुराधुरी । खाने जहान बहादुरी ॥
मिल्यो रहमतिखाँ बलीहद । मुत्तहौवरखाँ लह्यो पद ॥
फिरि शाहि बकसिस साजियो । सिगरे अमीर निवाजियो ॥
हाथी महा मद के दए । घोरे इराँक जए नए ॥
सुभ सरोपाय झलाझली । किय कनक बार सभाथली ॥
जेवर कलंगी झलझले । सरपेच साज भले भले ॥ ६६० ॥
शमशेर भूषन जाहिरी । सज करी फौज जवाहिरी ॥
तेहि भूमि चारि मुकाम कै । सब कटक को बिसराम कै ॥
फिरि कूच कूच लगार को । जहँ शहर शाहि मदार को ॥
पहुँच्यो तहाँ दल बीर को । किय दरस परसन पीर को ॥
दिन दस बसे तेहि थान जू । किय मेहर गरम देवान जू ॥

## गीता छन्द ।

मीरजुमिला बीर उत सों अरज पत्र पठाइयो ।
कासीद कागद कर लए दरबार ओर आइयो ॥

मुमताजखान लिखान लै सुख शाहि पै पहुँचाइयो।
यह है तकर्रुब खाँ तहाँ मजमून बाँचि सुनाइयो॥
माकिल वकील उदार सैयद अब्दुल्लह खान को॥ १७०॥
कायथ शिरोमनिदास राय महीप साही थान को॥
मिलि रह्यो मजलिस मौजदी की सचक तत्व विधान को।
धन लिख्यो कुतबुल मुलुक को सब भेद जो परवान को॥
इत मौजदी मगरूर मस्त अलस्त अमलैं खाइ कै।
सिगरे कलाँवत है अमीर भरे रहे चित चाइ कै॥
आवै न आवै मननि मैं फूले रहे इक भाइ कै।
माही मरातिब अलम पंजा तोग नौबति पाइ कै॥
दारू सु दारू भरत गोली अमल गोली रंग की।
मिरदंग ढोलक तोप औ सुर नाद रीत तुफंग की॥
प्याला पलीता सु भरि कै तहँ जीति मौजे भंग की॥ १८०॥
दिन रात यह चरचा रहे तदबीर और न जंग की॥
सब कमललोचन दुक्खमोचन कामरूप मनोहरा।
अति चतुर नृत्त कलान मैं मघवान मजलिस नोहरा॥
अनुराग उपजत राग सुनि सुनि कवित रस के दोहरा।
मनु ढरे साँचे नवल नाँचे नदा नट के छोहरा॥
कहुँ सभा मस्त कलावँती कहुं पातुरन की गाँहकी।
कहुँ मधन हरखे हिँजरा झर लगी ऊहिऽरु आहि की॥
कहुँ छोकरे बागे बने दरबार कुँजरिन राह की।
यह मौजदी की मौज है गति और नाहिँ निबाह की॥
इखत्यार कोकिलतास खाँ अरु जुलफिकारहि खाँ लियो॥१९०॥
दोऊ रहे बर बीर योधा बैर आपुस में कियो॥

---

( १९१ पंक्ति में ) "दोऊ रहे वर योधा वैर आपस में कियो"। हमने "बीर" शब्द अधिक कर दिया है।

ज्यों कठिन करई नीम रोगी मूदि आँखिन घूटियो ।

... ... ... ... ... ... ... ... ...

रह्यो गाजियुद्दीं खाँ वर्खा खाँ महमदअमी खाँ फूटिहै ।
अबदुस्समुद खाँ कमरुद्दीं खाँ जकरिया खाँ छूटिहै ॥
तहँ रहमरहमाँ खान अरु तूरानिया सब टूटिहै ।
परपंच कीनो मीर जुमिला जंग ये नहिं जूटिहैं ॥
इक रोज बैठे मौजदीं मदिरा बढ़ायो मौज को ।
उत साह सों चित चाह भरि करि हुकुम नव नवरोज को ॥
तेहि बीच आई खबरि आए फरुख शाहि कनोज को ॥ ७०० ॥
अरु एजुदीं भागे लए हमराह सिगरी फौज को ॥
यह सुनत एजुद्दीन भाग्यो फौज संग सबै भगी ।
तहँ सकल मजलिस मौज मैं इक बारगी दुख सों पगी ॥
तब लगी मुख बिष सी बिरी अरु गीत गारी सी लगी ।
अँग अमल की लाली भई तलवार औ डर रिस अगी ॥
कहाँ लों लिखिये कथा सब रीति देखि परी नई ।
हहरे कलाँवत गिर गए मेहरान को मुरछा भई ।
कहुँ परी ढिनगत ढोलकी सुध ताल घुँघरू की गई ।
सब गयो मद छुटि छाक सो रट ऊहि आहि दई दई ।
अति रिस भर्‍यो मन मौजदीं बकि उठत बारहिंबार है ॥ ७१० ॥
यह काम चूक कियो दियो करि कांफरा सरदार है ॥

---

( ६९३ पंक्ति ) वाला पद हस्तलिखित प्रति में नहीं है ।

( ७०२ पंक्ति में ) "सगरि भगि" था, हमने "संग सबै भगी" कर दिया है ।

( ७०६ पंक्ति में ) "सब रीति कछु देखि परी नई" था, हमने "कछु" निकाल दिया है ।

फिर बेतमीज अमीर सिगरे लै गयो इखत्यार है।
मन मैं न आई मसलहति अपनी खता की हार है॥
खोजा हुसेन न जंग जानत बात की कथनी कथी।
कहँ लरो लुतफुल्लाह सादिक साँचु है पानी पथी॥
करि संग दीने और सिगरे मसलहति तिनकी न थी।
सफ़जंग जीते सैद सों हमराह कौन महारथी॥
अब मैं चलो सजि सामुहैं कहि कौनधों ठहराइगा।
मेरी अवाई सुनत सब दल एक एक पराइगा॥
सब ओसलों तकि उदित सूरज बूँद बूँद बिलाइगा॥ ७२०॥
नहिं बचन देहौं आगेहूँ रन भागि को कित जाइगा॥
अब भोर सों करि दौर पहुँचत एक एकहिं मारिहों।
कोउ जियत जान न पाइहै दरबार द्वार पछारिहों॥
करि सेर देहों मस अहारनि टूक टूक बँटारिहों।
फिर बारहैं की ईंट ईंट उखारि जल में डारिहौं॥
मेरे भुजा बल शाहिजादेन सों न जौन लई गई।
तरवार के बल फौज के बल हिंद की भुता भई॥
रन मारि तीनों पादशाहहिं पादशाहति मैं लई।
सुलतान चाहत सो दिली बहकाइ ल्याए औरई॥
यह हुकुम पठयो ताहि जे पहुँचे भगोरा आगरैं॥ ७३०॥
बैठ रहो उतहीं सबै मिलि घाट घाट धरा धरैं॥
पुल तीनि बेगि बँधाइयो मजबूत बालँभपुर तरैं।
इलगार पहुँचत आइहों सफ जंग साज महा करैं॥
बकसी बुलाइ कह्यो सवारहिं साज सिगरो कीजिए।

---

(७३३ पंक्ति में) "सफजं साज महाकरे" है, हमने "जं" के साथ "ग" लगा दिया है।

सबको दुमाहो पेशगी गनि राति रातिहिं दीजिए ॥
करि मीर मंजिल को बिदा फिरि खबरि सब थल लीजिए ।
ततबीर देसी साधि जो परभाति राति चलीजिए ॥
फिरि हुकुम कीन्हो निकद जो सिगरे अमीर बुलाइ के ।
ततबीर चखिवे की करो सब रात रातिहिं आइ के ॥
सब साजि फौज प्रभात होतहिं होहु हाजिर आइ के ॥ ७४० ॥
इलगार उतरो आगरो मारों इँटाये धाइ के ॥
यह हुकुम निकसत ही एकाएक शहर खरभर शोर भो ।
साजे अमीर सजी सवारी बजी नौबत भोर भो ॥
जब स्वार भो खुद घटा घुमड़ी परे पाहन घोर भो ।
बद सगुन लखि सब कहैं हा यह कालिका को कोप भो ॥
दाहिने खर, चील्ह सनमुख, बाम बोल्यो काग है ।
अरु गई काटि गली बिली, थित राँड़ रोवत राग है ॥
आतपत्र निशान खंडित दंड परम अभाग है ।
जब स्वार मौजुद्दीन भो बद सगुन लागा लाग है ॥
दिन कटक माँझ उलूक बोलत लूक टूटत रात है ॥ ७५० ॥
कहुँ स्वान रोवत सुरनि सों कहुँ स्यारगन फिकरात है ॥
मड़रात सिर पर गीध के गन यों बढ़ो उतपात है ।
हहरे सिपाही सुपन में सब भागिबो बररात है ॥
उतपात औ बद सगुन सिगरो मूढ़ मन बहराइ के ।
इलगार पहुँचो आगरे ठहर्‌यो समोगर जाइ के ॥
तहँ मिले पजुद्दीन औ सिगरे भगोरा आइ के ।
सफ़ जंग की कथनी कथी अति बात बनक बनाइ के ॥
बिकरार बोल्यो मौजदीं अब सैयदों सो बूझिहों ।
रन मारि लेउँ गनीम कों तब बारहाँ हिं अरूझिहों ॥
सिगरो फिसाद कियो इन्हों दिल माह कीन्ही रूझि हों ॥७६०॥

येई अमोहर अंग के इन सों जगावत जूझिहों ॥
सादाति खाँ माजिद को मन मानि नाता आवता ।
फरजंद खाँ तेहिका पिशर सजि फौज आगे धावता ॥
वह भयो जो सम सामुदौला तेग कर फर कांपता ।
रन माँझ मेरे सामुहें अब कौन धौं ठहरावता ॥
पहिले छबीलेराम एजुद्दीन सों मुजरा कियो ।
फिर जाइ के उतहीं मिल्यो बदबख्त मोहिं दगा दियो ॥
अरु अली असगर खाँ मिल्यो उत जाइ आगे ह्वै लियो ।
मन में न ल्याये मोजदीनहिं देखिये इनको हियो ॥
यों कहि मोहल्ला लेन लाग्यो पांच लाख सवार भो ॥ ७७० ॥
तित तोपखानो लाख ह्वै गजराज कैक हजार भो ॥
फिरि करी तोपन की शलंगे गगन धूँवाँधार भो ।
धुरि धरा धसकति मेरु मसकति सबल यों दल भार भो॥
यों लिखि शिरोमनिदास राय उलाँक बेग पठाइयो ।
दरबार कुतुबुलमुलक के कासीद जोरी आइयो ॥
सब अरथ साहबराम माथुर प्रगट बांचि सुनाइयो ।
पर सुनत नैन रँग भये अति बीर रस चित छाइयो ॥
हँसि कह्यो अबदुल्लाह खाँ गलबा भयो उत शाह का ।
पाऊं जो अब मैं नेकहूं करि हुकुम शाहनशाह का ॥
इकबाल फर्रुखसियर को अरु करम इक अल्लाह का ॥ ७८० ॥
रन दौरि तोरों आजुहीं बल मौजदीं की बाँह का ॥
मजमून सुनि तजवीज करि करि फेरि अपने कर लयो ।
स्वारी तयार भई नई असवार सैयद है भयो ॥
खुशहाल मोछनि हाथ फेरत शाहि के मुजरे गयो ।
सब अरज कीन्हों अरथ शाहनशाह को हिय हरखयो ॥

---

( ७६७ पंक्ति में ) " के " अधिक था ।

बर मीरजुमिला को लिख्यो यह अरज सैद वजीर की।
दोऊ बराबर सी बिदी बर बात मीर अमीर की ॥
अँखियानि सरस्यो बीर रस साहबजहाँ रनधीर की।
फर तेग बाहक हाथ फरक्यो खरी मोछैं बीर की ॥
बर बारहां पति बीर सैद वजीर त्यों अरजी भयो ॥ ७९० ॥
आयो महम्मद खान बंग समाज साजि नयो नयो ॥
असवार बीस हजार बखतरपोश ज्यों घन ऊनयो।
सखरैत बीर बखी सबै पखरैत हाथी औ हयो ॥
तब हुकुम कीन्हों शाहि फरक किया कूच करार है।
मिलियो महम्मद खाँ मोहल्ला दै चल्यो इलगार है ॥
हमराह बीर अमीर जंगी साज तेज तयार हैं।
गहि आशला खाँ पेशखानो चलत आजु अगार है ॥
स्वारि तयार भई प्रभातहिँ शाहनशाह सवार भो।
मिलियो महम्मद खाँ सही असवार बीस हजार भो ॥
खुद आपु पंज हजार सब सरदार मनसबदार भो ॥ ८०० ॥
हमराह हिरउल को किया अलगार बीर अगार भो ॥
करि कूच कूच लगार को पलगार पहुंचो आगरे।
जल पिअत जमुना को दुओं दल सबल बालमपुर तरे ॥
तित पार बार मुहासरो मिलि दलप दोउ डेरा करे।
ए पेलि चाहत पार, उत वे घाट बाट धरा धरे ॥
दुहुँ ओर नौबति घोर घुमरत सकल जल हल कंपिओ।
दुहुँ ओर झंडे झलमले फहरानि उडगन झंपिओ ॥
रजधान भानु बिमान बिलखत आसमान सुढंपिओ।
दुहुँ ओर दल भर सहस फनिफन तुरग चपनि चपिओ ॥
दुहुँ ओर बादल सुदल सूर मयूर ज्यों हरखा करैं ॥ ८१० ॥
दुहुँ ओर तोपन की शलंगैं गाज गरज रखा करैं ॥

दुहुँ ओर चातक पिक गुनीगन कीर्त्ति सों करखा करैं ।
दुहुँ ओर गोला बान बूँदनि राति दिन बरषा करैं ॥
दुहुँ ओर भट ठट मन बढ़े सरजंग की अति मनमनी ।
दोउ पेलि चाहत पार भो, नित टरत ठाट दुओ अनी ॥
लगि नीर आवत कुद्ध उछरत दलप दोउ दिल्लीधनी ।
विकरार धार महानदी पछतात त्यों दोऊ पनी ॥
तेहि बीच वीर वजीर सैय्यद अरज आवत ही कियो ।
प्रभुराज चकतु प्रतच्छ लखि थल खबरि आनि हमें दियो ॥
कछु दूर पश्चिम आगरे तहँ थाह यमुना को लियो ॥ ८२० ॥
पै आब पारहु पारलों सुनि शाहि को हिय हरखियो ॥
करि झूठ दीन्हो गुलगुला तिरि मौजदीं उर वार भो ।
यह शोर भो चहुँ ओर जोर दिलेर दल तैयार भो ॥
कछु फौज भेजि गनीम मुख पर शहनशाहि तयार भो ।
तब राति रातिहिं दौरि सैयद थहरि तरि करि पार भो ॥
अड़ि रहो जौन गनीम मुख पर फौज तीन बलाइ कै ।
चलि कोस चारिक पहर एक तिते रह्यो ठहराइ कै ॥
जब भयो भोर अथोर दहुँ दिशि चढ़्यो ध्वान बजाइ कै ।
अति वेग तेग धनेस जमुना कूल पहुँचे आइ कै ॥
जब आनि पहुँच्यो जोर दल बल समथ साधन सो सध्यो॥८३०
अति धार भार खभार फनिपुर फनी सहसों फन खध्यो ॥
रजथान सों असमान मुद्रित सेतु सिंधुन में बंध्यो ।
जल प्रथम कीवनि बीच के थल पाछिले तरिबो नध्यो ॥

---

(८१२ पंक्ति में) "कित्तिसों करखाकरैं", पाठ था, हमने "कीर्ति सों करखा करैं", कर दिया है ।

(८२० पंक्ति में) "तहं", अधिक कर दिया है ।

एहि भाँति शाहनशाह जमुना उत्तरहिं ते उत्तरो ।
पर ओर रोज बिहाँसु पूरब कोस द्वैक सिकदरा ॥
तेहि बीच सरिता निकट भो कुलि कटक को डेरा खरो ।
सुनतहिं अवाई मौजदीं की फौज में खरभर परो ॥
यह खबर सुनते मौजदीं मन में महा रिस सों भरो ।
बकि उठ्यो यारहु देखना अब दौर जीवत हीं धरो ॥
बाचैं न कोऊ भागहू रहि एक एकहिं समरो ॥ ८४७ ॥
इन्ह कियो ढाढ़स के ढिठाई सो सजाय इन्हें करो ॥
कहि यो करेर नैन करि करि कोप डगनि तें कढ़्यो ।
शमशेर सरकत खुनिस खरकत मोछ फरकत मन बढ़्यो ॥
चतुरंग अंगी साज जंगी मत्तमें गल में चढ़्यो ।
धौंसा धकारनि धरनि धुरि। धुवलोक धूरिन्ह सो मढ़्यो ॥
हमराह वे भट पाँच लाख अभिलाख मन रन के भरे ।
सब जिरहबख्तरपोस भक्खर बारहू पर पक्खरे ॥
एहि भाँति रानि बरन्यो बली चलि ओर दक्खिन आगरे ।
फिरि भोर होतहि दौरि करि डेरा करेइ सिकन्दरे ॥
रनभूमि बीच रची सु अंतर कोस है दुहुं फौज सो ॥ ८५० ॥
थित पुरबी पर ओर औ परवार पूरब ओज सों ॥
दोउ बीर बाँके हरखि होंके त्यों अमीरन मौज सों ।
फर ओर शत्रु सँहारिये मजिये जमन की साज सों ॥
संवत सु सत्रह सै अन्हत्तरि पूस पून्यो बुध तहीं । (१)
सन सो इग्यारह तैंतिसा माह मोहर्रम चांदहीं ॥ (२)
अरु पादशाही माह आजुर बायसी श्रीधर कही ।
सफजंग की सायति सधी साहबजहाँ कीनी सही ॥
तिन भोर सों लगि पहर द्वै दिन वारिधर बरखा कियो ।
जब खुले बादर हरख सों दिल्लीधनी डंका दियो ॥

---

(१) संवत १७६९ । (२) सन् ११२३

दल सजे बीर अमीर सैद बजीर त्यों हिय हरखियो ॥८६०॥
चतुरङ्ग अंग उमंग भर रनभूमि पिखि पहिले लियो ॥
कर बीर चढ़ि ठाढ़ो भयो हमराह सब स्वारी ठटी।
जिहिँ ओर जो दल चाहिये तिहिँ ओर त्यों फौजैं बँटी ॥
लहि मिम्मिल मिगरे अगुहरे रजथान मों सरिता पटी।
अति सूर झंपत कुम्र्म कंपत शेष की बलता घटी ॥

## हुलास छन्द ।

हुकुम शाहि को लै गल गज्ज्यो ।
कुतुबुलमुलुक दाहिने सज्ज्यो ॥
बखतरपोश बीर हमराही ।
सैद सूर रनकाल सिपाही ॥
सैद सूर रनकाल सिपाही अति उतसाही हैं हमराही सकल सज ८७०
जे शाहि हुकुम लहि तेगें गहि गाह मारू मारू काहि गरजे ॥
बागें ढीली धरि घोरे दप करि मन में भरि सफजंग मजे ।
अबदुल्लह खान सैयद के धौंसे दक्खिन गहिरी बम्ब बजे ॥
दिलाजाक लोदी लोहाणी ।
पन्नी तरीन सुरसर बाणी ॥
दाउद जई खेशगी गर्वी ।
सु महम्मद बिट्टनी पर्वी ॥
बिट्टनी पर्वी मत्तो गर्वी अरु अरबी पखरैते ।
बनि बखतर झिलमें धायें दिल मैं जैनक तिल मैं सखरैते ॥
पाठे पठनेह लोह लपेटे कोहनि फैटे अखरैते ॥ ८८० ॥
यों अबदुल्लह खाँ संग बीर महम्मद खाँ बंगश अगरैते ॥

---

( ८६१ पंक्ति में ) "भर" अधिक कर दिया है ।

स्वामित शरम शील जेहि माही ।
बिप्र धेनु पालक छिति छाही ॥
तेग तेग हूँ कायम जो है ।
पूरो भट सूरो रन सो है ॥
सो है भट पूरो जो रन सूरो बीर गरूरो गहि गाजा ।
अति उद्धत युद्धर क्रुद्ध धनुद्धर जंगी जग सोर जोर छाजा ॥
दै हरि दांहीं सरकि सिरोही दौरे दक्खिन ध्वा बाजा ।
यों अबदुल्लह खाँ को देवान रन मडवो रतनचंद राजा ॥
रहै बीरता को मद छाको ॥ ८६० ॥
तोफंबाज बिरद है जाको ॥
तेग तेगहूँ में अति अरबी ।
दौर्यो गहि शमशेर मगरबी ॥
शमशेर मगरबी गहि गहि गरबी अटल अरबी सो आयो ।
आँखैं रिस घूमैं तोफैं झूमैं त्यों दल दूमैं दै पायो ॥
तरवारैं नंगी फौजें जंगी सैयद अंगी फरमायो ।
यों अबदुल्लह खाँ सँग बीर मुजफ्फर अली खाँ धायो ॥
बरकंदाज खान अनुसंगी ।
मुहसन खाँ अनवर खाँ जंगी ॥
सबल समुंदर खान सुयोधा ॥ ९०० ॥
यादगार बेगो अतिक्रोधा ॥
अति युद्धर क्रोधा सबल सुयोधा अरि अवरोधा निरभौरे ।
मंजूर मियाँ भट तैयब निकट ठाढ़े ठट्ट बार औरे ॥
सज्जे सन्नाहै जंग उमाहै जे रनसिंधु सहस पौरे ।
दुशमन भो दंग संग सय्यद सकल अरि दक्खिन दौरे ॥
दक्खिन फौज सकल गल गाजी ।
फिरि चौचमू आगिली साजी ॥

बीर हुसेन अली खाँ बंका।
बकसी चढ़यो कोपि दै डंका॥
सैयद रनबंका दै कर डंका दौन्यो लंका लगि शोर पन्यो॥ ६१० ॥
दंगी हथनालैं पक्खर ढालैं कर भूपालैं भूरि भन्यो॥
छिति भार न धारत शेष सँभारत ह्वै अति आरत हहरि हन्यो।
फौजैं धाईं चारिहु घाईं प्रथम अवाई जाइ भन्यो॥
त्यों इनायतुल्ला खाँ चांपा।
शुजा शुजा तुल्लह खाँ कांपा॥
अमद अली खाँ अस्प धयायो।
पद सिपाह हमराही धायो॥
धाये हमराही सकल सिपाही जंग उछाही सन्नाही।
केते रनधीर अमीर बीर फर फाजिल फदकि तेग बाही॥
बेगी सो बरकस सूरहु सरकस ह्वै ह्वै तरकस हैं जाही॥ ६२० ॥
ते बकसी संग दौकि दौर रननदी कोपि जिन्ह अवगाही॥
गुरुसी तरीन तीराही।
सरब मन नि ए बोही॥
नस्सुर गिलजी का सब काकर।
आरब सूर निआजी नागर॥
पेशगी रूमनार काशी आगर पणी उजागर रोशानी।
महम्मद बिट्टनी जे फर मर्मी छबी लोदी लोहानी॥
बखत्यार रुहेले ईसफ खेले दिलाजाक ओसर बानी।
यों दाउद जई जैनदी खाँ संग बाकी फौजैं फहरानी॥
सजि गुलाब अली खाँ आयो॥ ६३० ॥
जुलफिकार खाँ जेहि पद पायो॥
चढ़यो शेप शिकिन खान सु गाजी।
फतेअली खाँ तोपैं साजी॥

साजी बर तोपैं करि करि कोपैं फत्तह अलीखान बली।
भारी हथनालैं बान महालैं जंगी भालै भाँति भली॥
छकरे भरि गोले और अतोले भारनि डोले जंग थली।
यों बकसी सैद हुसेन अलीखाँ संग अगोही फौज चली॥

तसु हिरोल भो मीरमुशर्रफ।
फतह अली बुजरुक अरु अशरफ॥
अली असगरखाँ सैफुल्लह॥ ६४० ॥
अरु महमद हयाति रनदुल्लह॥

सिगरे रनदुल्लह साजी सुल्लह कायम कल्लह गोपि गजे।
फहराते कच्छी पायन्ह पच्छी तेग बरच्छिन्ह स्वच्छ सजे॥
आँखें रिसराती बैरिन्ह घाती जे उतपाती बीर मजे।
फौजहु की स्यारी फौज डरारी आगे भारी ख्यान धजे॥

उत्तर पिस्सर कि दाइदखाँ को।
आजमखान बीर बल बाको॥
जल हल थल थल पुहिम्म पवन।
सजी फौज अति दल भर दवन॥

अति दलभर दवन पुहुमिम्म पवन गढ़ मढ़ स्रवन थकानि सकैं॥ ६५०॥
संकित दिगवारन करत करारन पारावार न जल छलकैं॥
करकित कच्छप घन भजत तजत बन फटत फनीफन सहस लच्यो।
जब आजमखान और उत्तर फर मंडल माँड़ सफजंग रच्यो॥

बीर गुलाब मीर युद्दीखाँ।
सुलतां कुली खान फतह खाँ॥
महमद अमा महम्मद बाकर।
नेक कदम अतिही रन-आकर॥

अतिही रन-आकर तेज प्रभाकर तेग कराकर करखैं।
बीरन को मूल शूल अरि को अबदुल रसूल सर बरखैं।

धीरन में धरकस सावँत सरकस जंगो करकस परखैंते ॥ ९६० ॥
उत्तर तें दौरे साधि समोर वैरी और सरखैंते ॥
महाराज राजनि को राजा ।
सबल छबीलेराम गराजा ॥
चतुरंगी दल चपरि चलायो ।
कांपि ओर उत्तर तें धायो ॥
उत्तर तें धायो गरजत आयो बीर सुहायो बर जंगी ।
पखरैंते बाजी ताजे ताजी सावँत गाजी सफजंगी ॥
बखतर सन्नाही बीर उछाही दुशमनदाही अनुखंगी ।
फीलहुँ की स्वारी अति भयकारी फौजें भारी रनरंगी ॥
महावीर जे एक तें एक गाढ़े ॥ ९७० ॥
सुमार्नी अनी के सबै संग ठाढ़े ॥
धर्नी संग सोहैं सबै तेगधारी ।
सजे साज मों आपनी आसवारी ॥
नंद भगौतीदास को उत्तर तें रुधि आय ।
सावँत योधा प्रबल अति तिनको लए बुलाय ॥
दया बहादुर रिपु दल खण्डन ।
तासु नंद महिमण्डल मंडन ॥
गिरधरलाल बहादुर योधा ।
चढ्यो ओर उत्तर तें क्रोधा ॥
उत्तर तें क्रोधा जंगी योधा बसुधा सोधा एक सही ॥ ९८० ॥
जैतक जग निति जिति भूमण्डल कीन्ही कायम किति मही ॥

---

( ९६६ पंक्ति में ) "गरजगत" था, हमने "गरजत" कर दिया है।
( ९७२ पंक्ति में ) "धारि" है, "री" दीर्घ होनी चाहिए।
(९७९ पंक्ति में) "तीनको" था, हमने "तिनको" कर दिया है।

जाटै जेहि कूद्यो सो घर लूट्यो जहँ तहँ यूथ्यो तेग गही ।
वाही रनबंका दीन्हों डंका लंका संका बाढ़ि रही ॥

नृपति छबीलेराम को बेश ।
राय गुलाब रावहु नरेश ॥
मौजदीन को तृन गनि धायो ।
दप करि ओर आपनी आयो ॥

तिन तुरंग धायो दप करि आयो बीर सुहायो चाइ भरो ।
जित जंगी बान निशान लाख भूपाल छबीलेराम खरो ॥
पहुँच्यो तिहि ओरे अत्रनि जोरे पाइ समोरन रंग धरो ॥ ९९० ॥
राजा सों मिलि कै मुरुक्यो पिलि कै मौजदीन सो लपटि लरो ॥

या बिधि और ओर की साजैं ।
कहिहौं अब रिकाब की फौजैं ॥
अटल अमीर बीरवर बाँके ।
करनवाल एक कारन साके ॥

करता रन माँक जो बल बाँके बीरन छाके मौजभरे ।
फहरानी फौजें साजी मौजें जंगी मौजें रंग धरे ॥
ते बीर अमीर धीरधर युद्धर रन में कायम कीर्त्ति करें ।
बाँकनि दै दौरें साधि समौरें जाहीं ओरें मीर परें ॥

बली खान दौरान बहादुर ॥ १००० ॥
कीन्ही कायम किस्ति धुराधुर ॥
रह्यो बिरद सम सामुद्दौला ।
दल बल प्रबल बाहुबल तौला ॥

समसामुद्दौला भुज बल तौला बीर अगोला फील चढ़े ।
लश्कर की हाँही सकल सिपाही ते हमराही मोद मढ़े ।
बखतर दस्ताने कूंड ठाने बाँधे बाने तेज बढ़े ।
कर कायम दस्त फतह रुस्तम सों जे रनरीति पढ़े ॥

समसामुद्दौला को भाई ।
बीर मुजफ्फरखान सवाई ॥
जंग जुरे अतिही उतपाती ॥ १०१० ॥
अरबीलो दुशमन उर घाती ॥

दुशमन उर घाती अति उतपाती आखें राती रोस भरो ।
अरबीलो गब्बी अस्प अरब्बी तेग जुनब्बी हत्थ धरो ॥
द्वै तरकस बांधे सायक साधे साधि उपाधे खेज करो ॥
गब्बर को गंजक भूपति भंजक तेजी रंजक खानि खरो ॥

मख इनायति खान बीर हद ।
बली बली तसु बली महम्मद ॥
दोस्तअली खाँ साहिबखानो ।
करमंडल छाजे जेहि बानो ॥

छाजे जेहि बानो साहिबखानो जग मे जानो जोर छजो ॥१०२०॥
गब्बर मदमाने सर संधाने कोपि कमाने गहि गरजो ॥
सोभा को सागर बीर उजागर जानत जो सफजंग मजो ।
समसामुद्दौला संग अगोला दोस्तअली खाँ समरि सजो ॥

मुजफ्फर अली खान रन सज्ज्यो ।
अकबर अली खान गलगज्ज्यो ॥
खैरुद्दीं खाँ अली सु युद्धर ।
सज्यो दिलावर खान दिलावर ॥

युद्धर शोभाधर दलप दिलावर ते दरवर सरदार सजे ।
मंजीठी चामर कलँगी चामर चौरासी गजगाह छजे ॥
बाँके बनैते हय पखरैते है अगरैते तेज रजे ॥ १०३० ॥
समसामुद्दौला सँग रंग मे जंगी योधा गाज गजे ॥

सज्यो जोर सादाति खान अति ।
बीर बली माजिँदरान पति ॥

पक्खरैते मोगल मदमत्ते ।
ताते तुरँग तेग रँगरत्ते ॥
ते हाँ रँगरत्ते हैं बर तत्ते रन मैं फत्ते जे चाहैं ।
हाथी मदमत्ते पक्खर घत्ते मद वरखत्ते परवाहैं ॥
आये सरमैं सजि कत्ते कर मैं फरकैं फरमैं जे बाहैं ।
ते बीर बली माजिंदरान पति संग जंग दुशमन दाहैं ॥
सु फरजंद सादाति खान को ॥ १०४० ॥
शाहिजादो माजिंदरान को ॥
दल सज्यो फरजंद खान को ।
गंजक अरि भंजक गुमान को ॥
गाढ़े गढ़ गंजक बैरी भंजक मोरचा मंजक बंका है ।
रनमंडल पत्थ हत्थ गहि हत्थर अरिवर परभर शंका है ॥
अँगवै को लायक जाके सायक खरभरात डरि लंका है ।
जब वाज्यो गहरी बंबं बीर फरजंद खान को डंका है ॥
दूजो सुत सादाति खान को ।
अनुज बीर फरजंद खान को ॥
सबल सलावति खाँ भुव मंडन ॥ १०५० ॥
जुरत जंग दुशमन दल खंडन ॥
दुशमन दल खंडन महिमा मंडन डंड अडंडन कोपि करै ।
लारवे को चसको तालिब जस को बीरे रस को रंग भरै ॥
हमराही फौजैं बाँकी साजैं रन की मौजैं और भरै ।
माजिंदरान को शहिजादो फर सबल सलावति खाँ फहरै ॥
सुब सादाति खान को नंदन ।
सज्यो तीसरो शत्रुनिकंदन ॥
सैफ सैफखाँ की जग जाहिर ।
जासु जंगमहिमा महि माहिर ॥

महिमा महि माहिर जग में जाहिर जंग उछाहिर छिन रहै ॥१०६०॥
रुस्तम सो बल में दाकैं दल में जितक पल में फतह लहै ॥
जाकी फिरवानैं आलम जानैं साहि बखानैं धन्य कहै ।
सुब सबल नंद सादाति खान को सैफखान जब सैफ गहै ॥

जोहि अमीर खां काबिल मंड्यो ।
कोपि थान इराके खंड्यो ॥
जाको आलमगीर बखानो ।
लसै जासु बीरन में बानो ॥

बीरन में बानो शाहि बखानो जग में जानो जोर छजै ।
काबिल को सूबो बुद्धि अजूबो अति मनसूबो तेज रजै ॥
साही को बेटो लोह लपेटो बीरत फेटो जंग गजै ॥ १०७० ॥
जोहि लह्यो खिताब बाप को ताहि अमीर खान के ध्यान बजै ॥

घोर जोर धौंसा धुनि सज्ज्यो ।
रन मुमताज खान गल गज्ज्यो ॥
हातिम करन किनिक जब रिझ्झत ।
रुस्तम सों जब अरि पर खिझ्झत ॥

जब अरि पर चढ़त सज्जि सुब दल बल भट ठट्टनि ठटि खग्ग गहै ।
को भूप बीर दूजो ऐसो काहि को तुम सो रन मडि रहै ॥
सुनि बज्जत ध्वान दुबन भज्जत पुर पुर को प्रबल प्रताप दहै ।
मुमताज खान बलवान बीर ऐसी बिधि श्रीधर सुकवि कहै ॥
रीझत जब नेकहु सोलाखन की मंगन माहि को सकल लहै ॥१०८०॥
बरनै कहँ लगि दीनन के दारिद हेमदत्त सो सकल दहै ॥
दरवाजे सदा दान को, धौंसा बाजतु गहिरी बंब रहै ।
मुमताज खान बलवान बीर ऐसी बिधि श्रीधर सुकवि कहै ॥

---

( १०६१ पंक्ति मे ) "किताब" था, हमने "खिताब" लिख दिया है ।

त्यों इमत्याज खान दल गंजक ।
जुरत जंग दुशमन कुल भंजक ॥
जस इमत्याज तेज इक ठाहर ।
सज्यो फौज गरज्यो जिमि नाहर ॥
गरज्यो जिमि नाहर बीर उछाहर रन रस माहर जोर भरो ।
फौजनि को गाहक जस को चाहक दुर्जन दाहक तेज खरो ॥
आयो करि कोपै गहि गहि धोपै रन को चोपै चित्त भरो ॥ १०६० ॥
इमत्याज खान बलवान सजि दल हठि कर मंडल माझ अरो ॥
जिन मुमताज खान दल सज्ज्यो ।
हमराही लछ हलीम खाँ गज्ज्यो ॥
जुरत जंग दुशमन दल दाही ।
सबल बीर अफगान सिपाही ॥
अफगान सिपाही रिपुदल दाही रन की हाही रोज नई ।
शमले फहराते ताजी ताते रन की घातें जानि लई ॥
बरनै कवि श्रीधर जेहि दिशि भर मुमताज खान की फौज भई ।
ताही दिशि बाँको दिलाजाक सज्ज्यो लहीम खाँ बर गजई ॥
सजि राजा गंधर्वसिंह दल ॥ ११०० ॥
आयो शाहि रिकाब बीर बल ॥
सिगरे कुरी साज सजि आए ।
बानैत रजपूत सोहाए ॥
रजपूत सोहाए साजे आए हाडा गौर सोमबंशी ।
चौहान चंदेले बैस बघेले गहरवार औ रघुबंशी ॥
कछवाह सुलंकी हैहयबंशी सिरनेत परिहारंशी ।
गंधर्वसिंह राजा सज्ज्यो दल बुंदेला सूरजबंशी ॥
सज्यो गाजियुद्दीन खान दल ।
यों रुस्तम दिल खान महाबल ॥

दाउद खाँ हमराह सिधायो ॥ १११० ॥
बान दुपट्टे बाज सोहायो ॥
जेहि बान सोहाए रन के दाए बल सों छाए अरिदाही ।
जे मन के बेगे जंग अनेगे भारी तेगे है बाही ॥
खूंदे मैदाने पर के बाने चित्त न आने सिप्पाही ।
ते सजे बीर दुद्धर जुद्धर गाजुदीखाँ के हमराही ॥
सैफुल्लाह खान सजि आयो ।
जबरदस्त खाँ संग सोहायो ॥
कासिम बेग खान सुब सज्ज्यो ।
सुलताँ बेग खान गल गज्ज्यो ॥
बानैते सज्जे रन गलगज्जे धौंसे बज्जे भूमि हली ॥ ११२० ॥
कुल हत्थ पट्टे रन चौहट्टे खेले कट्टे मीड़ि थली ॥
अत्रनि के जोरे पूरब ओरे बैरिन की जिन फौज दली ।
ते सैफुल्लह खाँ संग रंग में हाँके बाँके बीर बली ॥
शाहनशाह साहिब को मातुल ।
अटल बीरबल को बल ता तुल ॥
सजि दल खानिजाद खाँ आयो ।
शाइस्ता खाँ जेहि पद पायो ॥
पायो पद साँचो कीरति राँचो रनभू माँचो जोर भरो ।
जाकी अति बाँकी चमू चलाँकी बीरन में दाँकी देत खरो ॥
बैरिन के मत्थर कीजतु तत्थर हाँकत हत्थर हत्थ धरो ॥ ११३० ॥
यों शाइस्ता खाँ फर फतूह दाँ गहि कमान मैदान अरो ॥
शाहनशाहि साहिब फरमायो ।
सजि अफरा सियाब खाँ आयो ॥
डील पील बल को जेहि दायो ।
महाबीर अगहर ह्वै धायो ॥

अगहर ह्वै धायो शह फरमायो बल को दायो जाहि लसै।
अंगूठनि मसकै धरनी धसकै कूरम कसकै सेस ससै ॥
गहि कै दुहु हत्थे गै बर सत्थे मत्थनि मत्थे मीडि मसै।
साहब समत्थ अफरासियाब खाँ यों रनमंडल धूम धसै ॥

अफजल खाँ सर्दार सदर सजि ॥ ११४० ॥
आयो हाफिज इलम ओज रजि ॥
रनमंडल मंडक जस गाहक।
बाहक तेग शत्रु दल दाहक ॥

शत्रुन को दाहक पत्र निबाहक जस को गाहक ओज रजो।
रन मंडल मंडन बैरि बिहंडन लै भुज दंडन जैत मजो ॥
मुसहफ़ को जहि बर कत्तो केवर कर कमान जेहि साज सजो।
यों अफजल खाँ सद्दर सद्दर आफिज फर नाहर ज्यों गरजो ॥

बीर सैद अनवर खाँ सो है।
देग तेग कायम जग जो है ॥
कर कमान जाकी जुलहाली ॥ ११५० ॥
जुरत जंग रन परत न खाली ॥

रन परत न खाली तेग कराली जग जुलहाली कौन सहै।
रस रूप मनोजें भूपर भोजें दिल दिल सौजें शाहि कहै ॥
विद्या गुन आकर कित्ति सुधाकर तेज प्रभाकर दुवन दहै।
सज्जित सन्नाह उतसाह चित्त सैयद अनवर खाँ खग्ग गहै ॥

महमद अली वंश उतसाही
जबर सैद सावत सिपाही ॥
फौजें मत गनीम की गाही।
बार हजार तेग जिन बाही ॥

तेगें जिन बाहीं फौजें गाही सबल सिपाही रन दायो ॥ ११६० ॥
रोसं हग राते ताजी ताते फरफरात मन भायो ॥

कने कंवर में भाले कर में बखतर गर में रिम छायो ।
हमराह मेंद अनवर खाँ मोई जवर हु जबरखान आयो ॥
त्यों दरबार खान दल साजा ।
जबे ध्यान श्रीधर बर बाजा ॥
फर ठाहर नाहर जिमि गाजे ।
सुनत घोर गब्बर गन लाजे ॥
गब्बर गन लाजे नाहर गाजे धोंसे बाज घहरि घंने ।
पखरैते तुरकी लेते फुरकी टापें खुर की छार छंने ॥
सोहें भट बाँके हय चढ़ि हाँके लोह ढाँके बार बन ॥ ११७० ॥
दरबार खान नर जग सु भुजवर आयो खग धर रोस मन ॥
इफतखार खाँ जंगी योधा ।
मुखलिस खान महाबल क्रोधा ॥
सज इलायची बेग सधाने ।
बहादुर दिल खा जग माने ॥
माने जग बाँको करता साको आगे दाँको दल दूमें ।
भाले की नोंके सुरगति रोके सरकी फोंके छबि भूमें ॥
सन्नाहो साजे गरब गराजे हय चढ़ि गाजे रनभूमें ।
यों बहादुर दिल खान भुजबल अरि को दल नाग नूमे ॥
जे पुस्तैन अमीर हजूरी ॥ ११८० ॥
तेग तेगहू कीरति पूरी ॥
बली अरसला खा गुन गरबी ।
दौर्‍यो गहि शमशेर मगरबी ॥
शमशेर मगरबी गहि गुन गरबी चढ़ि हय अरबी सो धायो ।
पखरैते बाजी तुरकी ताजी साजे गाजी सो आयो ॥
सोहे गर बखतर कूडें सिर पर कत्ते कंवर रन दायो ।
यों मीर अरसला खाँ अमीर रन धीर मीर फरमें आयो ॥

रन रसीद खाँ फतहुल्लह खाँ।
सरस तकर्रब खाँ बैरम खाँ॥
सजि जाँबाज खान रन धायो॥११६०॥
बीर फकीरुल्लह खाँ आयो॥

आयो रनबाँको करता साको एक कहाँ को भू फर मैं।
टोपें सिर ऊपर तरकस कंबर भाले कर बखतर गर मैं॥
धौंसे घहराने धुज फहराने शोभत बाने दू दर मैं।
बैरी दल भाने मानि निशानैं तानि कमानैं ज्यों सर मैं॥

सैद मुरुतुजा खान सुयोधा।
बीर बारहैं बाल सु क्रोधा॥
जिहिँ चहुँ ओर शत्रुदल रोधा।
एक बीर बसुधापति सोधा॥

बसुधापति सोधा जंगी योधा सैयद क्रोधा ज्यों बन मैं॥१२००॥
धाए हमराही सकल सिपाही तेगैं बाहीं बैरन मैं॥
ज्यों सिंह गराजे यों गल गाजे अरि करि लाजै ज्यों बन मैं।
अँगवै को लायक जिनके सायक को ठहराइ सकै रन मैं॥

टीकाराम चारु रुच नाढ़ी।
वीर बहेलिया कीरति बाढ़ी॥
चढ़ी फ़ौज मनु घटा असाढ़ी।
फतह जासु आगे नित ठाढ़ी॥

जनु घटा असाढ़ी फौजैं बाढ़ी फतह सु ठाढ़ी पुर गाजैं।
बंदूखैं भारी सहज डरारी सकल सवारी सों छाजैं॥
आरच्छी घोरे सुलगे तोरे मुहड़ी में जोरे जै काजे॥ १२१० ॥
यों टीकाराम कामतरु रन मैं शहनशाहि आगे राजे॥

मियाँ निहाल वली फतेह दाँ।
लह्यो खिताब सु यातमाद खाँ॥

मौजदीन के संगहि आयो ।
महाबीर अगहर ह्वै धायो ॥

अगहर ह्वै धायो तुरग धयायो दप करि आयो रंग भरो ।
अज्जीमुश्शानी अति अभिमानी पादशाह के पाँय परो ॥
साहब सुख मानो अपनो जानो दै करि पानो हाथ धरो ।
तित याहि हुकुम लै मुरक्यो पिलि कै जहाँदार सो जाइ अरो ॥

## हीर छन्द ।

तब मौजदीँ मन रोस कै, चहुं ओर बाँकी फौज कै ॥१२२०॥
हिरउल सु कोकिलताशखाँ, बलबंक बीर फतेह दाँ ॥
नौशेरी खाँ तसु नंद है, रन के सिखे फरफंद है ॥
आजम्म खाँ तसु बीर है, सफ जंग जोर अमीर है ॥
सुब सैद राजे खाँ जहीँ, अबदुस्समुदली खाँ तहीँ ॥
तहँ सैद अबुलगफार है, सफजंग जोर जुझार है ॥
जित अब्बदुल्लह खाम है, तेहि सामुहेँ सब ज्वान है ॥
द्वै लख सवारन साजि के, आए वली गल गाजि के ॥
हुसेनली खाँ जेहि दिशा, तित सज्यो जुलफिकार खाँ ॥
द्वै लख सवार सनाह सोँ, पखरैत फील उछाह सोँ ॥
फिरि जबर जानी खाँ चढ़यो, रनरंग रोस महा मढ़यो ॥१२३०॥
जै ओरजाँ निस्सार खाँ, सादिक सु बुतफुल्लाह खाँ ॥
तहँ दिल दिलेरो खाँ बली, मुखत्यार खाँ जस की थली ॥
सब बीर आए साजि के, चतुरंग दल गल गाजि के ॥
आजम्म खाँ बकसी जहीँ, सब सामुहेँ आए तहीँ ॥
राजा छबीलेराम जू, रनरंग धर जसधाम जू ॥
नव्वाब आजम खाँ जहाँ, हमराह भो राजा तहाँ ॥
महमद अमी खाँ बीर है, कमरुदीँ खाँ रनधीर है ॥

अबदुस्समुद खाँ दौर है, तहँ जकरिया खाँ ओर है ॥
सुत गाजियुद्दीँ खान को, चिकलीच खाँ बलवान को ॥
फिरि रहमरहमाँ खान जू, साजि चढ़े गहि किरवान जू ॥१२४०॥
सब मीरजुमिला संग है, द्वै लख सवार उमंग है ॥
यह बंक कोतल फौज है, सावंत उर मेँ ओज है ॥
द्वै लाख स्वारन सोँ सजे, उप रोस ध्वान घने बजे ॥
जित परत भारी भीर है, तित लरत जोर अमीर है ॥
इहि भाँति कर फौजेँ बटीँ, खुर घाट दल बल छिति छटीँ ॥
तहँ मीरजुमिला ओज सोँ, द्वै लाख कोतल फौज सोँ ॥
बानतै बाँके बीर सो, तूरान बार अमीर सो ॥
ओहि ओर कीनी बंचकै, इनके करे परपंच कै ॥

## हरिगीता छंद ।

दुहुँ ओर फौजैँ साजि योँ गल गाजि भट ठाढ़े भए ।
बाजे नगारे फीलवारे घम्म धुनि धुव कंपए ॥ १२५०॥
खुर धार भार दुधार सोँ छटि छार सूरज झंपए ।
तह वहलकी झुकि मेरु हहलत पहलसम भुव बंपए ॥
दुहुँ ओर फौजनि ओज सोँ रन मौज देखा देख भो ।
हथनाल तोपैँ बान जाल विशाल गरज अलेख भो ॥
घोरनाल घोर अँदोर दुहुँ दल रहकलास विशेष भो ।
फर बजी बहकि बँदूख अगनित तित बनैतनि तेख भो ॥
कड़ कड़ाकड़ सो अरावे छुटत टपकनि टाप की ।
चहुँ ओर घोर घटा मढ़ी धुवधार तोपतराव की ॥
वर बान बगरत बीजुरी सन गोल ओला थाप की ।
नहिँ पहर एक पिछानि काहू रही पर की आप की ॥ १२६० ॥
छुटि गयो सो धुँधकार त्योँ भिनुसार सोँ दुहुं दिसि भयो ।

छलकार करि अमीर सावँत चाँप सर कर वर लयो ॥
दप करत आगें बाजि बागें मौज मोद मनै भयो ।
बज उठे मारू मारु मारु अँदोर रनमंडल छयो ॥
तहँ तीर तर तर बान सर सर सुभट भर गोला चले ।
पग पिलत आगहिं आगहीं सावंत भूप भले भले ॥
भट लाल मुख सुख भरे पीरे रंग कायर हलहले ।
जिमि देखि जाचक दानि सुख मुख सूम दुख मुख बेकले ॥
इत उत दुहूं दल के जिजैं जे बीर बीर बिरी बिरे ।
ते करन साके बलिक बाँके हाँकि भट भट सों भिरे ॥१२७७॥
शमशेर सराकि सिराह वार संभार सावँत सिर चिरे ।
दीनी झमाझम झमकि झर झर झूमि झूमि किते गिरे ॥
तहँ दौरि अगवर ह्वै सिधायो धनी मुशरफ़ मीर है ।
तिन मीर बुजरुक मीर अशरफ़ तासु बीर सुबीर है ॥
तब जुलफिकार गह्यो महाबल जुलफिकार अमीर है ।
झमकी दुधारनि सार सार दुधार धीरैं धीर है ॥
तहँ अली असगर खाँ महाबल मदति पहुँचो जाइके ।
फिर जैनदीं खाँ बीर पहुँचो तेग अंग अँगाइके ॥
फतह अलीखाँ सफ शिकिनखाँ भये शामिल आइके ।
पहुँचो हुसेन अलीयखाँ धौंसे हिरौल बजाइकै ॥ १२८० ॥
सरदार तितहिं हुसेनली खाँ लै अमीरन संग है ।
रन भिरयो जुल्लाफिकार खाँ हमराह गाढ़े अंग है ॥
फर मैं फकाफक होत तेग कटार कटकतु फंग है ।
तहँ तीर तरकस सबै खाली भए लाख निखंग है ॥
सावँत सैदहुसेनली खाँ जोर जैतक सत्थ है ।
तहँ हत्थ हत्थनि मत्थ मत्थनि लरति लत्थनि पत्थ है ॥
गहि ऊबर हत्थर करे तत्थर परे बिरथ वितत्थ है ।
उहि सत्थ बार समत्थ हे एक मत्थगे बिनमत्थ है ॥

तब सैद अशरफ अगहरो भाई मुशर्रफ मीर को ।
समसार तासु अँगावतो अँग अंग ह्वै रन धीर को ॥ १२९०॥
हेरो सुहूरनि हाथ प्यालो हरखियो हिय बीर को ।
कीनी शहादति साहिबी सुरलोक बुद्धि गँभीर को ॥
पेल्यो मुशर्रफ मीर पीलनि पील बान जुझाइकै ।
तब अली असगरखाँ पिल्यो फर धार अंग अँगाइकै ॥
सुब जैनदीं खाँ गहि जुनब्बी कर कमान चढ़ाइकै ।
फत्तह अलीखाँ शफशिकिनखाँ भए अगहर आइकै ॥
इन सबनि जाइ अँगाइ घायनि लखि लगाई जूझियो ।
गिरबान गहि गहि जात रहि रहि एक एक अरूझियो ॥
फैली फुलंगें सार सारनि बजत परत न सूझियो ।
फत्तहअलीखाँ शफशिकिनखाँ जैनदीखाँ जूझियो ॥ १३०० ॥
उत जुलफिकारहि खान के सँग के अमीर किते गिरे ।
ठहराइ सकत न पाइ लखि दल आपु आइ किए थिरे ॥
हुस्सेनलीखाँ भो उतारू पिले जंगी मुँडचिरे ।
उत भो उतारू जुलफिकार दुधार दोऊ भट भिरे ॥
दोऊ अमीरल उम्मराव भिरे दोऊ तेहा भरे ।
हातिम दोऊ रुस्तम दोऊ कायम दोऊ रन कर करे ॥
शमशेर सरकि सिरोह की सावंत ये दोऊ लरे ।
घन घाइ खाइ अँगाइ अंगनि अटल ह्वै दोऊ मरे ॥
मुखत्यारखाँ जाँबाजखाँ जाँनिसारखाँ आटोप कै ।
सादिक सु लुतफुल्लाहखाँ आयो महाबल चोप कै ॥ १३१० ॥
फिर दिल दिलेर अलीयखाँ उमराव केतक कोप कै ।
जिहिं ओर आजमखाँ तहाँ फर लियो फौजनि छोप कै ॥
तब मारु मारु संघारु हाँ हाँ हाँ दुहूँ दल ह्वै रह्यो ।
राजा छबीलेराम आजमखाँ बर्छी कर बर गह्यो ॥

सुलताँ कुलीखाँ सैद शेखर सूखियतखाँ रिस भरयो।
फिर नेक कदम फतेह कर श्रीधर सुकवि जग जस लह्यो॥
तहँ पिले बसतर-पोश रोसभरे महा भमकी मही।
गिरवान गहि गहि जान रहि रहि हहँ हाँहँरि है रही॥
को गनै तरफत तीर की वर बान बरखन झर सही।
तरवारि ते तई वार त्यों अँगवत चलावत हरखही॥१३२०॥
तहँ कँपत कायर गात कदली पात बात मनोँ लगे।
जे सूमदान न देत है, जिय देत भागे डग ठगे॥
जे दान निरखे दान में जिय दान हूँ में जगमगे।
मुख लाल रंग प्रसन्नता हिँगु लाल रंग मनो रँगे॥
राजा छबीलेराम को जंगी महावत जूझियो।
मैं मंत मुख रुख फिरत लखि वर बीर मन महँ बूझियो॥
तब आपु दै कल दै अँगूठा जोर करत असूझियो।
रनथंभ पीलहि थाँभि पेलि लगाइ राखी लूझियो॥
राजा छबीलेराम जू को खेश सजि फौजें भली।
रन मड़यो रैया राय राव गुलाबराव मही हली॥ १३३०॥
मुखत्यार खाँ बलवान की चतुरंग पृतना दलमली।
मुखत्यार खान समेति हाथी साथ जूझयो तेहि थली॥
तब राज श्रीगिरधर बहादुर सुत्र बहादुर औ फबै।
फब कील हूलि हला कियो दौरे महादल के सबै॥
दप कियो रैयाराय राव गुलाब राव जहाँ जबै।
सरदार सिगरे हाँक दै दौरे दिलेर तहाँ तबै॥
भगवन्त राय दिवान कायथ बीर बर काकोरिया।
तसु नंद राय सुबंस गहि किरवान दर बर दौरिया॥
दप कियो बेनीराम नागर नौनिहाल अगोरिया।
फिरि शुजा सैद इमाम सेख सुपीर महमद पौरिया॥ १३४०॥
नर सूर सर बानी बली अफगाँ वतन चिहि टौलिया।

किरवान अहमद खाँ गही वा फौज फर बागै लिया ॥
फिरि सैद सुब शाकिर महम्मद मीर जिहिं रन लै लिया ।
जसु बतन ओलमगोट रो सफ़जंग में जस फैलिया ॥
दीन्यो गुलाब मोहैयुदीखाँ बीर आजम खान को ।
दीन्यो बली सुलताँ कुली खाँ जिनै जस किरवान को ॥
रन मड्यो शेख रसूखियत खाँ जाहि सम बलवान को ।
हरि कदम फत्तह नेककदम जु देग तेगहु बान को ॥
नव्वाब आजम खाँ तहाँ फर भूमि हाँकि हला कियो ।
सुलताँ कुली खाँ बाग बीर रसूखियत खाँ हूलियो ॥१३५०॥
भनि सुकबि श्रीधर नेक कदम सु फौज गुर गाढ़ो हियो ।
तहँ जबर जानीखान पर झर झरनि कै बर बरखियो॥
नव्वाब आजम खाँ महाबल जबरजानीखाँ भिरो ।
रह सत्थ आजम खाँ बली अँग अंग घन घायनि घिरो ॥
शमशेर सर सर तीर तर तर मुख न काहू को फिरो ।
तहँ हसित साथी सत्थ हाथी जूझि जानीखाँ गिरो ॥
इतके भए सरदार साथी सहित सेर सुघाइ कै ।
उतके किते जूझे अरूझे रहे लोह अघाइ कै ॥
नहिँ लरत चलत न बर परे दोऊ ओर अरराइ कैं ।
वे लाख, ये न हजार पूरे रहि रहे ठहराइ कै ॥ १३६० ॥
तब सैद कुतुबुलमुलुक बीर अमीर मनि रेला कियो ।
बंगश महम्मद खान शादी खान कर करवर लियो ॥
रन काज राजा रतनचंद महाबली हिय हरखियो ।
जैकृष्णदास दिवान निजमुद्दीँ अलीखाँ को बियो ॥
पुनि सैद अनवर खाँ समुद्दर खाँ सँभारी तेग है ।
मंजूर तैयब तरब अरबनि यादगारो बेग है ॥
सर्दार बारहे बार रुस्तमदस्त सैद अनेग है ।
ये सैद अबदुल्लाह खाँन रिकाब तेग फते गहै ॥

इत कियो हाँकि हलाक दूनौ आनि उन आगो लियो।
बलवान कोकिलताशखाँ तसु बीर आजमखाँ कियो ॥ १३७० ॥
फिरि सैद राजे खान अबदुल समुदलीखाँ हरेखियो।
नोशेरखान जुझार अबुलगफार हाँक तहाँ दियो ॥
कल लेन देत न रहकले हथनाल घन घुरनाल है।
तूफान कहर तुफंग की फहरान बान बिशाल है ॥
तहँ तीर सलभ-समूह-सम सुरलोक तर सरजाल है।
असमान भानु बिमान गो रुकि भयो धुंधूकाल है ॥
तब बीर बीर बिरीँ बिरे मनु गहवरे भट भट भिरे।
बाजि उठो मारू मारु मारु पुकार करि करि मुरे भिरे ॥
बानैत गब्बी है अरब्बी बीर गब्बी कर थिरे।
तहँ होत हूह फकाफकी फर मुख न काहू के फिरे ॥ १३८० ॥
तब गह्यो कुतुबुलमुलुक के बर उतरि कोकिलताशखाँ।
बंगश महम्मदखाँ इतै उत बीर आजमखान खाँ ॥
इत सूर सादीखान उत नौशेरीखाँ उनकीकखाँ।
भट भिरे एकहिं एक जे बबिरी बिरे दूहूँ पखा ॥
उत सैद राजेखान अबदुस्समुदअली बागैं लियो।
इहिँ ओर राजा रतनचंद गयंद चढ़ि रेला कियो ॥
सरदार इत उत के भिरे रन लत्थ पत्थनि के बियो।
तरवारि तीर तुफंग साँगि कटार कै बर बरछियो ॥
जयकृष्णदास दिवान निजमुद्दी अलीखाँ को बढ़ो।
तब सैद अनवरखाँ समुंदर खान अगहर ह्वै कढ़ो ॥ १३६० ॥
मंजूर तैयबतरब साहबराय रोस महा मढ़ो।
लखि पिलनि कुतबुलमुलुक की सब पिलत रनरस रुचि चढ़ो ॥
चहुँ ओर फौजनि फौज सो मन मौज मारु महा परी।
हाथियार भार तुषार भर मनु मघा मेघन की झरी ॥

झिरि झिलम कुंडि कुरी कुरी किरि गई बखतर की करी।
करि मारु मारु सँभारु यार सँभारु सुनियत ललकरी ॥
घन घटा घोर घमंड सों सम घुमड़ि फर फौजें रही।
धौंसे धोकारत गाज गहि तरवारि चमक छटा सही ॥
झर तीर गोलिन वार गोला परत ओला से तही ।
महि मची मेदनि गूद कीच कृपान सैयद जब गही ॥ १४०० ॥
मदभरे भ्रमत खरे अघाइ अघाइ करिवर थरि अरे।
सिर सरत श्रोनितधार मनहुँ पहार सों झरना झरे ॥
बढ़ि चली लोहुन की नदी लहरैं लखें कहि को तरे।
तेहि तीर दलदल मास को बल ठान काहू को परे ॥

## कवित्त।

फौजबल भुजबल मन मनसूबा बल,
श्रीधर हरीफन हरषि हहलावतो।
साहेब सरबुलंदखाँ नवाब करि करि,
पत्थ के से हत्थ महाभारथ मचावतो ॥
जहाँ शाहमौजदीं रफीउलकदर कूटि,
जेबर जुलफिकार खाँनै बाँधि ल्यावतो ॥ १४१० ॥
होतो हमराह जाहानूर के समर तो,
अजीम सों अजीम पातशाही कौन पावतो ॥

सनमुख साहजू के साजि सेन चारों अंग,
सैद अबदुल्लह खाँ बीर आयो बल में ।
बाजि उठ्यो मारू मारु मारु भो अँदोर जोर,
हाँके फील बाँके पेलि पैठे रेलि पल में ॥
श्रीधर अनत दोसतलीखाँ अँगाइ धाइ,
मुन कै चलाए भट वैसे चलाचल में ।

वाह वाह कहैं पातशाह औ सिपाह सबै,
वाह वाह रह्यो है सवच्च दुहूँ दल मे ॥ १४२० ॥

## छप्पय ।

श्रीधर दलबल प्रबल लखि लोकपाल रह लज्जि ।
महमद सालेह बीर जू चढ़त कटक बर सज्जि ॥
सज्जहल रन कज्ज जनप्पसमज्जज्जयवर ।
वंगग्गहनि मतंगग्गननि उतुंगग्गिरिवर ॥
रंगग्गति सुकुरंगग्गवन तुरंगग्गति गुर ।
पच्छछ्छर थिर कच्छ कर ब सुलच्छभ्भर पुर ॥
लच्छ भट्ट ठट्ठिय चढ़्यो महमद सालेह ज्वान ।
धुजा बान झलकैं बजैं उद्धद्धुनि धुर ध्वान ॥
उद्धद्धुनि धुर ध्वान द्धुकि सज युद्धज्जै भर ।
लक्ख भ्भट रण दक्ख क्खुमसुबियक्ख क्कै कर ॥ १४३० ॥
बारब्बलिय उछारभ्भरि क्खग बाहब्बल किय ।
बान ब्बिकट कमान क्कठिन कृपान हृदुर लिय ॥
कर लिय खग कोप्यो बली, महमद सालें ज्वान ।
अरि के बढ़ गढ़ मढ़नि पर, कियेउ सुकोपि पयान ॥
कोपप्पकरि पयानप्पथि घन ध्वान द्धलकत ।
लच्छ च्छहरि बरच्छ च्छबिवर स्वच्छ च्छलकत ॥
युद्ध ज्जुरत सकुद्ध भ्भट रण उद्ध द्धमकिय ।
बाहक बलिय उछाह भ्भरि खग बाहब्बल किय ॥
खग्ग बाह बलकिय बली महमद सालेह बीर ।
पुवन ठट्ठ कट्टिय भखो श्रोनग्नद भरि नीर ॥ १४४० ॥
श्रोनग्नद भरि नीर भ्भरित गँभीर भ्भलकत ।
लुत्थत्थिरन उलत्थज्जलजिय जुत्थत्थलकत ॥

बीच बलननगी चच्चल हूर कौचबभकत ।
मुंड भभरि करि कुम्भ भभरत सुअम्भ भभकत ॥
महमद साबेह बीर कोपि भारी रन मंडेउ ।
अरि की प्रतन प्रचंड खंड खंडन करि खंडेउ ॥
गीध गृद्ध बेताल मास हर मुंडमाल लिय ।
रुहिरय रुहिर अपार पाइ भैरव गलगज्जिय ॥
ताकि शत्रु सूर को ग्रास कर श्रोनसिंधु गज्जन कियो ।
लखि परब कृपानी रावरी मनहुँ दान उत्तम दियो ॥ १४५७ ॥

## कवित्त ।

फौजनि की घटा की घमंड घोर घेरु करि,
मौजदीन मघवा के मन में उछाह भो ।
तोप गरजत तरवारि बीजु तरजत,
बरषत बाननि अचल चाल्यो राह भो ॥
तब गिरिवर कर धारि गिरिवरधर,
श्रीधर भनत ब्रजमंडल की छाँह भो ।
अब गिरिधर लाल बहादुर बीर,
समसेर गहि कर पातसाही को पनाह भो ॥
माच्यो जोर जंग रंग आजम अजीम जू सौं,
गालिब गनीम आयो महमद गरूर है ॥ १४६० ॥
श्रीधर सरबुलंद खाँ नवाब दौर कै,
हिरौलही हटायो कीनों चमू चकाचूर है ॥
मारि खानि खालि में बिदारि राउ दलपति,
गंजेउ जुलफिकार खान को गरूर है ।
वाह वाह करे पातशाह औ सिपाह रही,
सही समसेर तेरी शाहि के हजूर है ॥

अहाँदार शाह शमशेर जोर जेर करि,
जहाँ शाहि रफीसान की ही कौन सी तथा।
आजम के संगन से जंग महरायो त्यों,
जुलुफिकार खाँ को फेर लावतो वहै पथा ॥ १४७० ॥
श्रीधर सरबुलंद खान किरवान धनी,
रुस्तम के काम के बढ़ावतो बड़ी कथा।
बार बार कहै पातशाह अपसोस करि,
हाय हमराह यो अजीम शाह के न था ॥
श्रीधर फरुकसाहि मौजदीं भिरे हैं दोऊ,
पूरो नेक कदरा कों करम अलाह को।
कीनो खग बाह मोगलानि के दलानि भो,
हिरोल को पनाह जाके कोप की पनाह को ॥
गालिब गनीम गाज गंज मगरूरनि को,
गरब को दलिक गजब गुमराह को ॥ १४८० ॥
देखे पातशाह उत शाह पायो निज दल,
वाह वाह करत सिपाह पातशाह को ॥
भारी पातशाह दोऊ आगरे अगारी लरैं,
धौंसन की दुहूँ ओर श्रीधर धुकार है।
बाजै बीर बीर गोला बान तरवारि तीर,
बाजे सार भार होत सोर मार मार हैं ॥
शेख खैरुल्लाह अलेख रन कीनो कैई दिनो,
जुगनि के भूखे मसहारिन अहार है।
घाय खाए बेसुमार पैठि दल अरि कै सु,
मार तें गिराए बीर बाँके बेसुमार है ॥ १४९० ॥
बखतरपोस पखरैत फील स्वारन की,
कारी घटा भारी ज्यों पयोद प्रलै काल को।

श्रीधर भनत गोला बान सर झर भर,
बरखत थाँभे को करैरी तरवाल को ॥
दिलाजाक डपटि हलीम खाँ बरग जाइ,
दल मींडि मार्‍यो मौजदीन बिकराल को ।
श्रोनित सलित तट नाँचे प्रेत पहपट,
घट घट घूँटे कर खप्पर कपाल को ॥

इत गल गाजि चढ्यो फरुकसियर शाहि,
उत मौजदीन करि भारी भट भरती॥ १५०० ॥
तोप की डकारनि सोँ बीर हहकारनि सोँ,
धौंसा की धोकारनि धमकि उठी धरती ॥
श्रीधर नवाब फरजंद खाँ सु जंग जुरे,
जोगिनी अघायो जुगजुगनि की बरती ।
हहर्‍यो हिरौल भीर गोल पै परी हाँ तूँ न,
करतो हिरौली तौ हिरौलै भीर परती ॥

मार्‍यो मौजदीनै फर बिफारि पलक बीच,
कीनो मौजदीन को कटकु अद्द अद्द है ।
मींडि गढ़ आजम अजीम अजमति गढ़,
कूद्यो जटवारे के सकल मही मद्द है ॥ १५१० ॥
श्रीधर भनत महाराज श्रीछबीलेराम,
तेरे बैरी बाँची काहू सूर की न सद्द है ।
जीत्यो ज्यारो ओर मेरी फिकिर सो फौज जोर,
ऐसे महाराजा सोँ गहानि गाढ़ो गढ़ है ॥

फिर मण्ड्यो श्रीधर छबीलेराम राजा,
पातशाह कोँ हिरौल पातशाहत को पाहरू ॥
तोप की तरापैं तोरि गोला को गुलेल गनि,
पेलि दल गार्‍यो मौजदीनै गाहि गाहरू ॥

थके हारे हर थंभ देषि आतपत्त थभं,
जैत रनखंभ बीर विक्रम उछाहरू ॥ १५२० ॥
सुरुखरू आप भयो आबरू दिलीस पायो,
माहरू रफ़ीक़ भो मुखालिफ़ सियाहरू ॥
भाखनि सों भाला भिन्यो बरछा सों बरछानि,
सरे समसेर समसेरनि सुरंग मैं ।
तीरन को कीनो तन तीरनि तुनीर तोरु,
तोरादार जोरन न पावतु सुफंग मैं ॥
जंग सुलतानी मैं कहानी कैसी कीनो काम,
श्रीधर छबीलेराम राजा रनरंग मैं ।
साढ़ेतीनि हाथ कद दसहथा हाथी चढ्यो,
दोई हाथ होत हैं हजार हाथ जंग मैं ॥ १५३० ॥
श्रीधर अवाई देषि फरुर्कासियर जू की,
आयो मत्त मौजदी अनेक अभिलाख कै ।
घरिकु घमंड घोर माच्यो गइ मुरि बागैं,
अड़ियो छबीलेरामै राजा मन माख कै ॥
मारि पर दल हरखायो जूथ जोगिनी को,
करत बड़ाई सिवासंकरहि साख कै ॥
एकै बीर कैयो लाखैं एक के न आन्यो मन,
एक ही गनत कैयो लाख कैयो लाख कै ॥
माच्यो जोर जंग दुहूँ ओर पातशाहनि सौं,
उत तें उमड़ि दल मौजदी को धायो है ॥ १५४० ॥
आजमखाँ जू के संग शाह की नजरि आगे,
सैद सुलतान जहाँ जग तें जगायो है ।
श्रीधर सुकबि तीर तरल तुफंग सौं,
सितारा देखो चुनि सरदारनि गिरायो है ।

खाली कीनो पल में अमारी हौदा हाथिन को,
    ओखो होत यामें स्वार आयो कै न आयो है ॥
फरुकसियर शाहि जहाँदार शाहि दोऊ,
    आगरे अगारी अरे पातसाही हेत मैं ।
श्रीधर बजत मारू बाजे बाजे बीरन के,
    मुरि गई बागैं रहे केतक न चेत मैं ॥ १५५० ॥

अंगद सो अड़ो पातशाहनि पलटि डार्‌यो,
    एवी एतो आजमखाँ सबल बनैत मैं ।
महा दुख भारथ को कमनैती पारथ की,
    जैसो भीम भुज बल भाख्यो कुरुखेत मैं ॥
श्रीधर कृपान गहि मुसलेह खान रन,
    कीनो घमसान यों मसान हहरात हैं ॥
झुंडनि झुंडूले प्रेत लोहू के प्रवाह परे,
    लाती लैरैं पैरि पेलि पियत अन्हात हैं ।
खोपरा लौं खोपरिन फोरैं गलकत गदू,
    पोरीलों पलासी खाल खैंचि खैंचि खात हैं ॥ १५६० ॥
पाखर से खापरनि चहुवा चुरैलनि के,
    चाइ भरे चर चर चर्पार चबात हैं ॥

## छप्पय ।

भट्ट ठट्ट डट भट्ट भट्ट हरि आभट्ट हरि ।
उब्बत जुब्बत कुद्ध सुद्ध गज्जत जिमि केहरि ॥
बीर मुसल्लेह खाँ अलद्द उलद्द दल सज्जिय ।
पख्खर पख्खर लख्ख स्याह सन्नाह समज्जिय ॥
बल तडित वेग तरपत कड़ाकि रस बर श्रीधर धर कुरेउ ।
तहँ गोलापत्थर वित्थरिय सो अरि मत्थर थत्थरि थुरेउ ॥

मीर मुशर्रफ बीर कोपि भारी रन मंडेउ ।
अरि की प्रतन प्रचंड खंड खंडह करि खंडेउ ॥ १५७० ॥
गीध गूद बेताल मासहर मुंडमाल लिय ।
रुहिर प रुहिर अपार पाइ भैरव गल गज्जिय ॥
तजि सत्तु सूर को ग्रास फर श्रोन सिंधु मज्जन किएउ ।
लखि परत कृपानी रावरी मनहुँ दान उत्तम दिएउ ॥

## कवित्त ।

आयो मौजदीन उत इततेँ फरुकसाहि,
दुहुँ ओर सोर ललकारेँ बीर बीर की ॥
भरा भरी गोलन की झरा झरी तेग की,
कटारिन की कराकरी तरातरी तीर की ।
श्रीधर बिलोयो दौरि बीरन की भीर रुंड,
मुंडन को मेरु श्रोन सलिता गँभीर की ॥ १५८० ॥
बाह बाह करै पातसाहरु सिपाह सब,
देखो रे दिलेरी यारो मुशरफ मीर की ॥
कोऊ ढूँढो कोऊ वारो काहू मै न गुन भारो,
कोऊ वारनारी बस मन मैँ न आयो है ।
सुंदर सुजान सुजा सीलवंतु ओजवान,
दान पूरो एकै तोहि विधि ने बनायो है ॥
श्रीधर भनत सानी जलालदीँ अकबर,
फरुकसियर पातशाह वर पायो है ।
बाल पातशाहति सोयंवर कर करति,
तोहि देखि रीझि जयमाल पहिरायो है ॥ १५९० ॥
गेद्दी सौँ अराबो टारि भेड़ी सौँ बिदारि दल,
बल दल खूँदि कीनो छीन एजदीन को ।

धावा करि पूरब तें डावा डारि फौजनि को,
मीन सो पकरि लीनो शाहि मौजदीन को ॥
श्रीधर भनत पातशाहनि को पातशाह,
फर्रुकसियर भो पनाह दुहूँ दीन को ॥
मुलुक मुलुक दौरी फरदै फतूहनि को,
काँप्यो डरि गबर हरख बाढ्यो दीन को ॥
साजि दल फरुकसियर पातशाहपति,
श्रीधर बढ़त जब सहज शिकार है ॥ १६०० ॥
धूमरू सुभासा में मराम इसफामें कित,
सुनि जलधर धुनि धौंसा की धुकार है ॥
हबसाने हहल खँधारिन के खल भल,
बलक बदकसान जान न रुका रहै ।
तारा दे केवारा दे केवारा देके वारा देहि,
पौरि पौरि लंकपुर परत पुकार है ॥
दक्खिन दहेलि पेलि पच्छिम उदीची जीति,
पूरब अपूरब हठीलो हाथु लायो है ।
श्रीधर शहनशाहि फरुकसियर नर,
सातो दीप सरहद्द हिंद की मिलायो है ॥ १६१० ॥
दिन दिन बाढ़ति है बाढ़िहइ दिन दिन,
दिन दिन दूनी पातशाहति बढ़ायो है ।
और पातशाह पातशाही पावैं जब पाए,
तोसों पातशाह पातशाही जेब पायो है ॥
शादी शादियाने के उछाह आतपत्रनि के,
अंग अंग बाढ़े रंग बाढ़े है रखन के ॥
तेरी पातशाही पातशाही पायो जेब फल,
ठाढ़े नभ सुमन प्रसून बरखत के ॥

श्रीधर भनत पातशाहन को पातशाह,
फरुकसियर नर जबर नखत के ॥ १६२० ॥
तिनके बखत जे वै खखत तखत तोहि,
बैठत तखत बाढ़े बखत तखत के ॥

इति ।